04 - आस्थाएं और परम्पराएं धर्म नहीं होती

05 - आवारा कुत्तों को शेल्टर में ही रखा जाए

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 01 जून, 2026

06 - भीषण गर्मी : भारत के शहरों के सामने बढ़ती चुनौती

07 - अवैध बिक्री पर रोक नहीं लगी तो उग्र आंदोलन की...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 269, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

आती थी फर्माइश जितनी,
लिख-लिख करके पर्ची में!
उतने भी मेहमान जुटे ना,
शायर तेरी अर्थी में!!
इतनी लज्जाजनक कमाई,
है शब्दों के साधक की!
अर्थ भरी इस दुनिया में,
हर अर्थ सिसकते अर्थी में!!
सारे चेहरे छिन्न भिन्न थे,
खाली दर्पण टूटा था!
काव्य समर्पण ऐसे रोया,
फूट-फूट कर अर्थी में!!
शायर कैसे चुप रह सकता,
वह मस्ताना बोल गया!
यारा यह तो चलता रहता,
परंपरा की बस्ती में!!
हमें अंधेरों से डर कैसा,
अपना दीपक साथ लिये हम!
हमको आता इसे जलाना,
महफिल हो या अर्थी में!!

– ओम प्रकाश तिवारी

प्रसंगवश

कर्नाटक : सीएम की कुर्सी तक कैसे पहुंचे डीके शिवकुमार

इमरान कुरैशी

कर्नाटक के अगले मुख्यमंत्री बनने जा रहे डीके शिवकुमार अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अपने दृढ़ संकल्प से किसी को भी चौंका सकते हैं। यह बात उनके मार्गदर्शक और दिवंगत मुख्यमंत्री एसएम कृष्णा को भी एक रात समझ में आ गई थी।

शिवकुमार ने 1999 में शपथ लेने जा रही कांग्रेस सरकार के मंत्रियों की सूची में अपना नाम शामिल करवाने के लिए सो रहे एसएम कृष्णा को आधी रात को जगाया था। इस क़िस्से को खुद शिवकुमार ने दिसंबर 2024 में कर्नाटक विधानसभा में कृष्णा को श्रद्धांजलि देते हुए सुनाया था, 'मंत्रियों की सूची उन्होंने (कृष्णा) और मैंने मिलकर तैयार की थी और पार्टी हाईकमान को भेजी थी। लेकिन जब रात में सूची आई, तो उसमें मेरा नाम नहीं था।'

विधानसभा में उन्होंने कहा था, 'मैंने उसी रात अपने ज्योतिषी (राजगुरु बेल्लूर शंकरनारायण) द्वारकानाथ से सलाह ली। उन्होंने मुझे कहा कि जब तक मैं दरवाज़ा खुद नहीं खोलूंगा और मंत्री पद की मांग नहीं करूंगा, तब तक मुझे यह नहीं मिलेगा। उन्होंने मुझसे कहा था कि सत्ता छीननी पड़ती है। मैंने उनकी सलाह मानी।'

अगली सुबह होने वाले शपथ ग्रहण समारोह के लिए मंत्रियों की सूची पहले ही राज्यपाल को भेजी जा चुकी थी। शिवकुमार ने कहा, 'मैंने कृष्णा से कहा कि मेरे बिना वह मुख्यमंत्री पद की शपथ नहीं ले सकते।' शिवकुमार ने विधानसभा को बताया कि उनके राजनीतिक उभार में उनके ज्योतिषी की बड़ी भूमिका रही है और उन्होंने चुनावों में उनकी जीत और हार की भी भविष्यवाणी की थी।

पार्टी के एक नेता ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, 'हमें नहीं पता कि इस बार उन्होंने किसका दरवाज़ा खटखटाया लेकिन यह मानना पड़ेगा कि वह अपने लक्ष्य हासिल करना जानते हैं।' यह कहने से पहले कि कृष्णा उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किए बिना मुख्यमंत्री नहीं बन सकते, शिवकुमार काफ़ी 'निवेश' कर चुके थे। उन्होंने कृष्णा को राज्यसभा चुनाव जिताने में मदद की थी। जब कृष्णा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष थे, तब शिवकुमार उनके सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में गिने जाते थे।

सियासत में निवेश की सलाह देने के अलावा शिवकुमार अपने दोस्तों को ज़मीन में निवेश करने की सलाह भी देते रहते थे। उनका तर्क था कि ज़मीन 'आर्थिक स्थिरता' देती है। यह बात उन्होंने उस समय कही थी, जब डॉ. मनमोहन सिंह के नए आर्थिक सुधारों के कारण बेंगलुरु और उसके आसपास ज़मीन की क़ीमतों में तेज़ उछाल आने वाला था। उन्होंने सथानूर से कनकपुरा बनी सीट पर एचडी देवेगौड़ा जैसे नेता के खिलाफ़ चुनाव लड़ने के लिए अपनी ज़मीन बेच दी थी। उन्होंने दूसरों को दी गई अपनी ही सलाह मानी और रियल एस्टेट, ग्रेनाइट और शिक्षा के कारोबार में अपने हित बढ़ाते हुए राज्य के सबसे अमीर नेताओं में जगह बना ली।

कर्नाटक के बाहर भी डीके शिवकुमार ने कांग्रेस को कई बार संकटों से बाहर निकाला है। इसलिए कुछ लोग उन्हें पार्टी का 'संकटमोचक' तक कहते रहे हैं। वर्षों के दौरान उनकी संगठनात्मक क्षमता के कारण 2003 में उन्होंने महाराष्ट्र के 40 कांग्रेस विधायकों की मेज़बानी की, ताकि विलासराव देशमुख के नेतृत्व वाली डेमोक्रेटिक फ्रंट सरकार को बचाया जा सके। उसी अनुभव ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के राजनीतिक सचिव अहमद पटेल को 2017 में राज्यसभा के चर्चित चुनाव के दौरान गुजरात के 44 विधायकों को शिवकुमार की देखरेख में भेजने के लिए प्रेरित किया। अहमद पटेल ने बेहद कांटे की टक्कर में यह चुनाव जीता और अमित शाह की उन्हें हराने की कोशिशों को नाकाम कर दिया। लेकिन इसके बाद शिवकुमार के यहां प्रवर्तन निदेशालय ने छापे मारे गए और 2019 में उन्हें 50 दिनों के लिए दिल्ली की तिहाड़ जेल में रखा गया। इसी दौरान सोनिया गांधी उनसे मिलने तिहाड़ जेल पहुंचीं और शिवकुमार ने उनसे कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाए जाने की इच्छा जताई। उन्होंने वादा किया कि वह राज्य में पार्टी को सत्ता में वापस लाएंगे। उन्होंने 2023 में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के साथ मिलकर यह लक्ष्य हासिल भी किया।

शिवकुमार ने 2024 में बेंगलुरु में आयोजित एक सम्मान समारोह में कहा था, 'सोनिया गांधी जी तिहाड़ जेल आई थीं और उन्होंने मुझसे केपीसीसी की ज़िम्मेदारी संभालने को कहा था। सिद्धारमैया और मैंने मिलकर पार्टी को मज़बूत किया और उसे फिर से सत्ता में लेकर आए, जबकि कुछ लोगों ने त्रिशंकु जनादेश की भविष्यवाणी की थी।' उसी कार्यक्रम में सिद्धारमैया ने कहा था, 'आप शिवकुमार के बारे में कुछ भी कहें, लेकिन इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि वह बहुत अच्छे ओर्गेनाइज़र हैं।'

संगठनात्मक प्रयासों में किया गया वही 'निवेश' 26 मई को उनके काम आया। राहुल गांधी ने पहले सिद्धारमैया के साथ लंबी बैठक की और उन्हें पद छोड़ने के लिए मनाया।इसके बाद उन्होंने शिवकुमार से संक्षिप्त मुलाकात की और फिर अपनी मां से सलाह लेने चले गए। इसके तुरंत बाद वह एआईसीसी कार्यालय लौटे, जहां सिद्धारमैया, शिवकुमार और अन्य नेताओं के साथ एक और दौर की बैठक हुई।

वहीं अंततः यह तय हुआ कि शिवकुमार कर्नाटक के अगले मुख्यमंत्री होंगे।

राजनीतिक विश्लेषक और एनआईटीटीई एजुकेशन ट्रस्ट के निदेशक (अकादमिक) प्रोफ़ेसर संदीप शास्त्री ने शिवकुमार के उभार को 'कई स्तरों पर पार्टी के प्रति निष्ठा का पुरस्कार' बताया है। उन्होंने यह भी कहा, 'एक तरह से कांग्रेस पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के लिए ऐसी स्थिति आ गई थी कि वह बदलाव को और टाल नहीं सकता था। पार्टी हाईकमान राजस्थान, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश में कार्रवाई में देरी के नतीजे देख चुका था। मुझे नहीं लगता कि वह कर्नाटक में ऐसा जोखिम लेना चाहता था।'

पार्टी के भीतर यह भी माना जाता है कि प्रदर्शन के लिहाज़ से सिद्धारमैया पार्टी के भीतर दो समानांतर शक्ति केंद्रों के बीच घिरे हुए थे। अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान सिद्धारमैया एक तरफ़ शिवकुमार और दूसरी तरफ़ एआईसीसी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के प्रभाव से जूझ रहे थे। अज़ीम प्रेमजी विवि में गवर्नेंस और पब्लिक पॉलिसी के प्रोफेसर ए. नारायण ने कहा, 'सबसे अच्छी बात यह हुई है कि केंद्रीय नेतृत्व ने फ़ैसला ले लिया है। शिवकुमार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह लोगों को साथ लेकर कैसे चलेंगे, ख़ासकर लिंगायत समुदाय से आने वाले लोगों को।' पार्टी के भीतर इस बात को लेकर भी मतभेद है कि क्या कुरुबा समुदाय, जिससे सिद्धारमैया आते हैं, उनके मुख्यमंत्री नहीं रहने के बाद भी कांग्रेस का समर्थन करता रहेगा। संभव है कि शिवकुमार उन अन्य ओबीसी समुदायों को एकजुट कर लें, जो ज़मीनी स्तर पर कुरुबा समुदाय के वर्चस्व का विरोध करते हैं। लेकिन यह एक मुश्किल काम है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जापानी मॉडल से बुजुर्गों को संभालेगा केरलम

- इमारतें व्हीलचेयर अनुकूल बनेंगी
- 'स्किल बैंक' से युवाओं को जोड़ेंगे

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। देश में सबसे तेजी से बुजुर्ग होती आबादी वाले राज्यों में शामिल केरलम ने अब इस चुनौती से निपटने के लिए जापान का मॉडल अपनाने की तैयारी कर ली है। नई राज्य सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए देश का पहला समर्पित विभाग और वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाने की घोषणा की है। 'भारत में बुजुर्ग' रिपोर्ट 2021 के अनुसार केरलम में 2011 में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की हिस्सेदारी 12.5त्न थी, जो अब 16.5 से 18.7 फीसदी पहुंच चुकी है। 2031 तक बुजुर्गों की संख्या कुल आबादी की 20.9 फीसदी तक पहुंचने के आसार हैं; जबकि भारत का यह 13.1 फीसदी होगी। यही नहीं, 2051 तक राज्य की एक-तिहाई आबादी बुजुर्ग होने का अनुमान है। पहले से योजनाएं चल रही हैं, लेकिन ये प्रयास बिखरे हुए हैं। केरलम में महिलाएं ज्यादा जीती हैं।

बंगाल में बॉर्डर पर फेंसिंग लगाने पहुंची बीएसएफ

- स्थानीय लोगों ने जताई खुशी बोले-अब चैन से सो सकेंगे

कहा- अब हम भी अराजक बांग्लादेशियों को दे रहे चुनौती

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल बॉर्डर का 600 किलोमीटर का एक हिस्सा ऐसा है, जहां बांग्लादेश के साथ सीमा पूरी तरह खुली है। कोई फेंसिंग नहीं है। यहां बीते दिनों जब बीएसएफ की टीम बॉर्डर नापने के लिए पहुंची तो गांव वालों ने मिठाइयां बांटी। यह इलाका है मुर्शिदाबाद जिले के जलंगी बाजार में जीरो लाइन पर बसा सकारपाड़ा गांव। 4 हजार की आबादी और 2500 मतदाता। इनमें 95 फीसदी लोग खेती पर निर्भर हैं। गांव का भूगोल बेहद संवेदनशील है। घर खत्म होते ही खेत आ जाते हैं और खेत खत्म होते ही बांग्लादेश। ग्राम पंचायत सदस्य पिंटू मंडल का घर गांव में सबसे आखिर में है। परिवार के पास 30 बीघा जमीन है। स्थानीय पिंटू मंडल ने बताया कि हमें शाम 5 बजे के बाद अपने खेतों में जाने की अनुमति नहीं है, लेकिन बांग्लादेश के लोग कभी भी हमारे खेतों में घुस आते हैं और फसलें काटकर ले जाते हैं। बीते 30 साल में ऐसा कोई भी महीना नहीं बीता, जब उनसे विवाद न हुआ हो।

अब तक बीएसएफ को 27 किमी जमीन दी जा चुकी

बंगाल में नई सरकार बनने के बाद से अब तक बीएसएफ को बॉर्डर की 27 किमी जमीन दी जा चुकी है। इनमें 18 किमी में फेंसिंग होनी है और 9 किमी में बॉर्डर आउट पोस्ट विकसित करने की योजना है।

सरकार का 45 दिनों में 600 एकड़ जमीन देने का लक्ष्य

सबसे ज्यादा जमीन मुर्शिदाबाद (38.80 एकड़) में दी गई है। इसके बाद जलपाईगुड़ी (35.16 एकड़) और कूचबिहार (22.92 एकड़) का स्थान है। यह जमीन भारत-बांग्लादेश सीमा पर बार्ब्ड वायर फेंसिंग (कंटीले तार), आउटपोस्ट और सुरक्षा ढांचा बनाने के लिए दी गई है। राज्य सरकार ने कुल 600 एकड़ जमीन 45 दिनों के भीतर बीएसएफ को देने का लक्ष्य रखा है।

जनहित हमारी सरकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण है : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने शाजापुर जिले को 388 करोड़ रुपये की लागत के 43 विकास कार्यों की दी सौगात

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के नए कीर्तिमान गढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के 12 वर्षों के स्वर्णिम कार्यकाल के लिए उनका अभिनंदन करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्ग दर्शन में मध्यप्रदेश भी निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। मध्यप्रदेश के गठन के बाद यहां सिर्फ 5 मेडिकल कॉलेज थे, लेकिन हमारी सरकार ने जनहित को सर्वोपरि रखा और पिछले दो साल में ही प्रदेश को 7 नए मेडिकल कॉलेजों की सौगात मिल चुकी है। मध्यप्रदेश में शाजापुर जिले की अपनी एक अलग पहचान रही है। शुजालपुर के सुंदरसी का संबंध पुराने समय में सम्राट विक्रमादित्य से जुड़ता है। शुजालपुर शाजापुर जिले की सबसे सक्षम और संपन्न तहसील है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, शुजालपुर में आयोजित कॉलेज चलो अभियान और प्रदेश के महाविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया के शुभारंभ के लिए आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार तथा अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय तथा आयुष चिकित्सालय का किया भूमिपूजन: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 388 करोड़ रुपये की लागत से 43 विकास कार्यों का भूमि-पूजन और लोकार्पण किया। इसके साथ ही 70 करोड़ रुपये की लागत से आयुर्वेदिक महाविद्यालय, चिकित्सालय और 14 करोड़ 37 लाख की लागत से 50 बिस्तरीय आयुष चिकित्सालय का भूमि-पूजन किया।

मुख्यमंत्री ने 4 सांदीपनि विद्यालयों का किया लोकार्पण: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 122 करोड़ रुपये की लागत से माँ शारदा सांदीपनि विद्यालय, महाराणा प्रताप सांदीपनि विद्यालय, मिहिर भोज सांदीपनि विद्यालय और राजा भोज सांदीपनि विद्यालय का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में 14 करोड़ 58 लाख रुपये की लागत से 4 नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का लोकार्पण संपन्न हुआ।

देश में 25 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला जा चुका है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार सुशासन के माध्यम से प्रदेश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रही है। राज्य के प्रत्येक गरीब, किसान, युवा और महिला सहित सभी वर्गों के जरूरतमंदों को जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। आज देशभर में 25 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला गया हैं। यह गर्व का विषय है। आज उज्जैन से लेकर अयोध्या और धार की भोजशाला तक जयकारे गूंज रहे हैं। हमारी सरकार न्यायालय के निर्णय को लागू कराने की प्रतिबद्धता के साथ कार्य करती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में प्रदेश में विकास की गंगा प्रवाहमान है। नए मेडिकल कॉलेज और आयुर्वेदिक कॉलेज खुल रहे हैं। आगामी ढाई साल में प्रदेश के विकास कार्यों में कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी।

कृषि अर्थव्यवस्था के लिए 'आम' नहीं, बल्कि बहुत खास है

पीएम मोदी ने की 'मन की बात' में आम उत्पादक किसानों की तारीफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में देशभर के आम उत्पादक किसानों की सराहना करते हुए कहा कि उनके अथक परिश्रम और समर्पण की बदौलत 'फलों का राजा' आम हर साल लाखों परिवारों तक पहुंचता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में गर्मियों का मौसम आते ही आम की चर्चा हर घर में शुरू हो जाती है और शायद ही कोई ऐसा घर होगा, जहां आम को लेकर उत्साह न हो। उन्होंने कहा कि हर इलाके का अपना आम, अपना स्वाद और अपनी खुशबू होती है। महाराष्ट्र और कोंकण का हापुस (अल्फांसो), गुजरात का केसर, उत्तर प्रदेश का दशहरी और मेरी काशी का लंगड़ा आम लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। पीएम मोदी ने लंगड़ा आम की खासियत का भी जिक्र करते हुए कहा कि पकने के बाद भी इसका रंग कई बार हरा ही रहता है। उन्होंने बिहार के जर्दालू आम की सुगंध की प्रशंसा करते हुए कहा कि उसकी खुशबू दूर से ही पहचान में आ जाती है। इसके अलावा उन्होंने चौसा और मालदा जैसी प्रसिद्ध किस्मों का भी उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि दक्षिण भारत में बंगनपल्ली, तोतापुरी, नीलम और मलगोवा आम की अपनी अलग पहचान है। वहीं, पश्चिम बंगाल का हिमसागर तथा ओडिशा और आंध्र प्रदेश का सुवर्णरेखा आम भी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं।

वैश्विक बाजारों तक पहुंच रही आमों की पहचान

उन्होंने कहा कि जगह बदलती है तो आम का रूप, रंग और स्वाद भी बदल जाता है। यही भारत की विविधता की खूबसूरती है। पीएम मोदी ने कहा कि अब भारतीय आमों की पहचान केवल गांवों और स्थानीय बाजारों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे वैश्विक बाजारों तक भी पहुंच रहे हैं। उन्होंने आम की खेती से जुड़े किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं 'मन की बात' के माध्यम से आम की पैदावार से जुड़े अपने किसान भाई-बहनों की प्रशंसा करता हूं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 01 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सदानीरा समागम

भारत भवन के मंचों पर लोक और विश्व कला का अद्भुत प्रदर्शन

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा भारत भवन में आयोजित सदानीरा समागम के पांचवें दिन लोक, शास्त्रीय और अंतरराष्ट्रीय कलाओं का अद्भुत संगम देखने को मिला। दिनभर चले सांस्कृतिक आयोजनों में विश्वप्रसिद्ध बैले नाट्य प्रस्तुति 'स्वान लेक', निमाड़ी लोकगीतों तथा भरतनाट्यम आधारित नृत्य नाटिका 'नर्मदे हर हर' ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया।

प्रारंभ में पूर्वरंग मंच पर सुप्रसिद्ध निमाड़ी लोकगायिका मनीषा शास्त्री एवं उनके दल ने निमाड़ अंचल की समृद्ध लोक परंपराओं से जुड़े गीतों की मनोहारी प्रस्तुति दी। लोकधुनों और पारंपरिक गायन के माध्यम से कलाकारों ने जल संरक्षण तथा प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का संदेश दिया। इस अवसर पर वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने कलाकारों का स्वागत सदानीरा समागम के विशेष स्मृति-चिह्न एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर किया।

नर्मदा की आध्यात्मिक चेतना का सजीव चित्रण

सांस्कृतिक संध्या के अंतर्गत देश के प्रख्यात भरतनाट्यम कलाकार वैभव आरेकर ने अपनी एकल प्रस्तुति 'नर्मदे हर हर' प्रस्तुत दी। अपनी गहन, शांत और भावप्रधान शैली के लिए प्रसिद्ध आरेकर ने नर्मदा नदी की आध्यात्मिक महिमा, सांस्कृतिक विरासत और जीवनदायिनी स्वरूप को शास्त्रीय नृत्य के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया।

बैले स्वान लेक ने बांधा समां- भारत भवन के अंतरंग सभागार में विश्वप्रसिद्ध बैले नाट्य प्रस्तुति 'स्वान लेक' का मंचन हुआ। द इंपीरियल फर्नांडो बैले कंपनी द्वारा प्रस्तुत इस कालजयी कृति ने प्रेम, त्याग, विश्वास और जादू की भावनाओं को मंच पर जीवंत कर दिया।

प्रस्तुति की कोरियोग्राफी महान बैले आचार्य मारियस पेटीपा की मूल रचना पर आधारित थी, जिसे फर्नांडो अगुइलेरा ने नए स्वरूप में प्रस्तुत किया। निर्देशन फर्नांडो अगुइलेरा और रफी खान ने किया, जबकि संगीत महान रूसी संगीतकार प्योत्र इलाइची टचैकोवस्की का था।

कथा राजकुमारी ओडेट की है, जिसे दुष्ट जादूगर रोथबार्ट के श्राप के कारण हंस का जीवन जीना पड़ता है। झील के किनारे राजकुमार सीगफ्रीड से उसकी भेंट होती है और दोनों के बीच प्रेम जन्म लेता है। सच्चे प्रेम की शक्ति से श्राप को तोड़ने के संघर्ष की यह कहानी दर्शकों को भावनात्मक यात्रा पर ले गई।

संक्षिप्त समाचार

टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी पर हमले में पांच लोग गिरफ्तार

- ममता बनर्जी बोलीं-हेलमेट नहीं होता तो जान चली जाती
- कहा-भाजपा नेताओं-अफसरों ने डिस्चार्ज का दबाव बनाया

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी पर हुए हमले में पुलिस ने 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये गिरफ्तारी वीडियो फुटेज के आधार पर रातभर चली छापेमारी के बाद हुई। ममता बनर्जी ने हमले को साजिश बताते हुए कहा कि

ममता के 2 आरोप; बोलीं- अब घर पर इलाज

भाजपा नेताओं और दक्षिण कोलकाता के डीसीपी की ओर से डॉक्टरों और अस्पताल प्रबंधन को धमकी भरे फोन आ रहे थे। अगर अभिषेक की हालत गंभीर नहीं थी तो उन्हें इंटेसिव थैरेपी यूनिट (आईटीयू) में क्यों रखा गया। फिर अचानक उन्हें अस्पताल से छुट्टी क्यों दी गई।

अगर अभिषेक ने हेलमेट नहीं पहना होता तो उनकी जान जा सकती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि अस्पताल में भर्ती अभिषेक को जल्द डिस्चार्ज कराने के लिए भाजपा नेताओं और पुलिस ने दबाव बनाया। अभिषेक पर शनिवार को दक्षिण सोनारपुर में हमला हुआ था, जहां वे चुनाव बाद हिंसा के पीड़ित कार्यकर्ताओं से मिलने गए थे। हमले के बाद अभिषेक को पहले अपोलो अस्पताल ले जाया गया। ममता भी उनसे मिलने पहुंचीं थी। अपोलो में डॉक्टरों ने अभिषेक को घर पर आराम की सलाह दी।

दिल्ली के कपल ने महाकाल मंदिर में की सगाई

सिक्योरिटी एजेंसी पर 50000 का जुर्माना, पंडित जी को भी नोटिस

उज्जैन (नप्र)। मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित विश्व प्रसिद्ध बाबा महाकालेश्वर मंदिर परिसर में नियमों का उल्लंघन कर इंस्टाग्राम रील बनाने का एक नया विवाद सामने आया है। दिल्ली से आए एक जोड़े ने वीआईपी प्रोटोकॉल व्यवस्था का

फायदा उठाकर मंदिर के संवेदनशील क्षेत्र गणेश मंडपम में सगाई की और अंगूठी पहनाने का वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। 26 मई को अपलोड हुआ यह वीडियो जैसे ही वायरल हुआ, मंदिर की पवित्रता और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठने लगे।

मंदिर प्रशासन ने की बड़ी कार्रवाई

सोशल मीडिया पर तीखी आलोचना के बाद हरकत में आई महाकाल मंदिर प्रबंध समिति ने 28 मई को पूरे मामले की आंतरिक जांच बैठाई। जांच में सुरक्षा और नियमों की बड़ी लापरवाही सामने आने के बाद शुक्रवार को मंदिर प्रशासन ने दोषी सुरक्षा एजेंसी और कर्मचारियों के खिलाफ कड़ा एक्शन लिया है। परिसर में बिना अनुमति के किसी भी तरह की फोटोग्राफी या रील बनाना पूरी तरह प्रतिबंधित है।

जनसंपर्क अधिकारी का आधिकारिक बयान- इस गंभीर लापरवाही को देखते हुए मंदिर प्रबंधन समिति ने निजी सुरक्षा एजेंसी पर 50,000 रुपये का भारी जुर्माना लगाया है। वीडियो में दिख रहे अटेंडेंट को मंदिर के सभी विशेष द्वारों से प्रवेश के लिए स्थायी रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। संबंधित प्रोटोकॉल अधिकारी और पुजारी को कड़ी चेतावनी जारी की गई है, साथ ही जिम्मेदार कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस दिया जा रहा है।

दो चरणों में लागू होगा वन नेशन वन इलेक्शन पहले 20 राज्यों के चुनाव एक साथ का है प्लान

वन नेशन, वन इलेक्शन पर सुरक्षित रास्ता तलाश रही सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार वन नेशन वन इलेक्शन के लिए सुरक्षित रास्ता तलाश रही है। इसके लिए बनी जेपीसी से जुड़े सूत्रों के मुताबिक समिति टू-फेज ट्रांजिशन मॉडल पर विचार कर रही है, जिससे राज्यों में बार-बार चुनाव कराने या विधानसभाओं के कार्यकाल में बहुत बड़ी कटौती करने की जरूरत न पड़े। पूरे देश को एक साथ चुनावी चक्र में लाने के बजाय दो चरणों- 2029 और 2034 में बढ़ने का विकल्प सबसे व्यावहारिक माना जा रहा है। पहले चरण में 2029 के लोकसभा चुनाव के साथ करीब 20 राज्यों के विधानसभा चुनाव कराए जा सकते हैं।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में पैनल का गठन

एक राष्ट्र-एक चुनाव पर विचार करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता में 2 सितंबर 2023 को एक पैनल का गठन किया गया था। इस पैनल ने हितधारकों-विशेषज्ञों के साथ चर्चा और 191 दिनों के शोध के बाद 14 मार्च को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपनी रिपोर्ट सौंपी थी।

संविधान में गुंजाइश है लेकिन सहमति पर जोर

लॉ कमीशन के पूर्व सदस्य और मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के लॉ कॉलेज के डीन आनंद पालीवाल ने कहा कि एक देश-एक चुनाव को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए संवैधानिक विकल्प मौजूद हैं। कुछ राज्यों में विधानसभा का कार्यकाल पूरा होने से पहले चुनाव कराए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों में कार्यकाल बढ़ाने के विकल्प भी हैं। भारत में पहले भी विशेष परिस्थितियों में लोकसभा और विधानसभाओं के कार्यकाल में बदलाव किए गए हैं। हालांकि किसी भी व्यापक बदलाव के लिए संसद द्वारा आवश्यक कानूनी प्रावधान और राजनीतिक सहमति जरूरी होगी। 1952 से 1967 तक यानी चार बार लोकसभा व अधिकांश विधानसभा चुनाव साथ हुए। 1967 के बाद कई राज्यों में सरकारें गिरने लगीं।

यूपी में छात्र की हत्या का आरोपी एनकाउंटर में ढेर

बकरीद के दिन मारा था, भागते वक्त पुलिस ने मारी गोली

गाजियाबाद (एजेंसी)। गाजियाबाद में 11वीं के छात्र सूर्या चौहान की हत्या का मुख्य आरोपी असद (19) एनकाउंटर में मारा गया। वह शहर छोड़कर भागने की फिराक में था। रविवार तड़के 4 बजे पुलिस ने घेरा तो उसने फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में असद ढेर हो गया। पुलिस ने शनिवार को ही उस पर 50 हजार का ईनाम घोषित किया था। मुठभेड़ शहर के वसुंधरा इलाके में हुई।

डिप्टी सीएम ने कहा था- हत्यारों को बख्शेंगे नहीं

शनिवार को 10 घंटे हंगामा चला था। हिंदू संगठन सड़क पर उतर आए थे। परिजन ने सूर्या का अंतिम संस्कार करने से इनकार कर दिया था। पुलिस ने देर शाम परिवार को समझाकर अंतिम संस्कार करवाया था। डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने कहा था- हत्यारों को बख्शा नहीं जाएगा।

धार्मिक आयोजनों से समाज में शांति, सद्भाव और संस्कारों का होता है विस्तार : गोविंद सिंह राजपूत

राहतगढ़ बना अध्यात्म और आस्था का केंद्र, सिद्धचक्र महामंडल विधान में पहुंचे खाद्य मंत्री

भोपाल। प्रदेश के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत राहतगढ़ नगर में 25 मई से 3 जून तक आयोजित श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ में शामिल हुए। उन्होंने विधि-विधान से पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा आयोजन समिति, जैन समाज और क्षेत्रवासियों को इस भव्य धार्मिक आयोजन की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि राहतगढ़ क्षेत्र में इस प्रकार के धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजनों का निरंतर होना पूरे क्षेत्र के लिए सौभाग्य की बात है। ऐसे पुण्य आयोजनों से समाज में धर्म, सद्भाव, नैतिकता और शांति का वातावरण निर्मित होता है। उन्होंने कहा कि जैन समाज द्वारा समय-समय पर आयोजित धार्मिक अनुष्ठानों ने राहतगढ़ को एक विशिष्ट आध्यात्मिक पहचान प्रदान की है और आज यह नगर अध्यात्म एवं आस्था के प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी अलग पहचान बना रहा है। हमारे आचार्य धीरज जी जो कि

हमारे क्षेत्र के हैं, उन्होंने अपने विचारों और ज्ञान से देश-विदेश में धर्म ध्वजा फहराई है।

जैन धर्म का संदेश विश्व कल्याण का मार्ग - मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि जैन धर्म अहिंसा, सत्य, करुणा, अपरिग्रह और आत्मकल्याण का संदेश देता है। जैनाचार्यों और तीर्थंकरों की शिक्षाएं मानवता को शांति, संयम और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। वर्तमान समय में जब समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब जैन धर्म के सिद्धांत और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

उन्होंने कहा कि विश्व शांति महायज्ञ और सिद्धचक्र महामंडल विधान जैसे आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा, आध्यात्मिक चेतना और नैतिक मूल्यों के प्रसार का सशक्त माध्यम भी हैं।

सिद्धचक्र महामंडल विधान का विशेष महत्व - खाद्य मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि जैन धर्म में सिद्धचक्र महामंडल विधान अत्यंत महत्वपूर्ण और पुण्यदायी अनुष्ठान माना जाता है। यह विधान आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष मार्ग की प्रेरणा प्रदान करता है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सदुणों का विकास करते हुए धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लेता है।

उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में एकता, भाईचारा और पारस्परिक सहयोग की भावना मजबूत होती है। साथ ही हजारों श्रद्धालुओं के आगमन से स्थानीय व्यापार, रोजगार और सेवा गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलता है।

राहतगढ़ में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब - आयोजन स्थल पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर पूजन, विधान एवं धार्मिक प्रवचनों का लाभ ले रहे हैं। पूरा नगर भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक वातावरण से सराबोर है। जैन समाज एवं आयोजन समिति द्वारा श्रद्धालुओं के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की गई हैं। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने आयोजन समिति के पदाधिकारियों, समाजजनों एवं सहयोगियों को सफल आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन समाज को नई दिशा देने के साथ-साथ राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मां ने तीन मासूम बेटियों को जहर देकर खुद भी किया सुसाइड

शहडोल में एक ही घर से उठीं 4 अर्थियां

शहडोल (नप्र)। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के पपौंध थाना क्षेत्र अंतर्गत हिरवाह गांव से एक रूह कंपा देने वाली खबर सामने आई है। यहां एक मां ने अपनी तीन मासूम बेटियों के साथ कीटनाशक खाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। इस सामूहिक आत्महत्या कांड में मां और तीनों बच्चियों की दर्दनाक मौत हो गई है। इस घटना के बाद से पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है और हर कोई स्तब्ध है।

अकेले घर में उठाया आत्मघाती कदम- मृतका की पहचान अनीता सिंह के रूप में हुई है, जो अपने घर में तीन बेटियों- अर्पिता (7 वर्ष), कृष्णकुमारी (4 वर्ष) और रितिका (2 वर्ष) के साथ रहती थी। अनीता का पति पेशे से ट्रक ड्राइवर है और वह आजीविका के सिलसिले में हैदराबाद में रहता था। यह परिवार मूल रूप से तिखवा गांव का रहने वाला है, लेकिन हिरवाह गांव में अपनी सात एकड़ जमीन पर बने प्रधानमंत्री आवास में अनीता बच्चों के साथ रह रही थी। घटना के वक्त घर में कोई और बड़ा सदस्य मौजूद नहीं था। थाना प्रभारी के अनुसार एक महिला ने अपनी तीन बेटियों के साथ जहरीले पदार्थ का सेवन कर आत्महत्या की है। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने चारों को अस्पताल पहुंचाया, जहां मां और दो बच्चियों की पहले ही मौत हो चुकी थी।

इंडिया गठबंधन एक बार फिर भरेगा हुंकार

- 6 जून को बड़ी बैठक, राहुल गांधी ने ममता बनर्जी से की बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के 6 जून को होने वाली इंडिया गठबंधन की बैठक में शामिल होने की संभावना है। इसे एक बेहद महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम की तरह देखा जा रहा है। देश के बदलते राजनीतिक माहौल के बीच बनर्जी के इस अहम बैठक में शामिल हो सकने की सूचना तब सामने आई, जब लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को बनर्जी से आधे घंटे से भी अधिक समय तक बातचीत की। राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, चुनावी मोर्चे पर गठबंधन के कई मुख्य सहयोगियों को मिली लगातार हार के बाद विपक्षी खेमे की रणनीति निशाने पर है।

जनरल सुब्रमणि ने देश के नए सीडीएस का संभाला पदभार

पाकिस्तान-चीन मामलों के एक्सपर्ट हैं, गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के नए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने रविवार को पदभार संभाल लिया। दिल्ली में उन्हें साउथ ब्लॉक लॉन्स में गार्ड ऑफ ऑनर दिया

- असली टास्क सेना में थिएटर कमांड मॉडल को लागू करना होगा

गया। वे देश के तीसरे सीडीएस है। उन्होंने जनरल अनिल चौहान की जगह ली है। जनरल चौहान शनिवार को रिटायर हुए थे। पदभार संभालने के बाद उन्होंने कहा कि भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना, रक्षा मंत्रालय और सभी संबंधित संस्थान देश की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एकजुट हैं। उन्होंने कहा, भारतीय सेना में स्वदेशी हथियारों और सैन्य उपकरणों के अपडेशन, उनकी खरीद और इस्तेमाल को तेज किया जाएगा। सेना की ताकत बढ़ाने के लिए नई सोच और नए तरीकों को अपनाया जाएगा। नए सीडीएस सुब्रमणि के सामने पहला टास्क सेना में थिएटर कमांड मॉडल को लागू करने को होगा। दरअसल एक दिन पहले सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने थिएटर कमांड व्यवस्था पर बोलते हुए कहा था कि यह प्रक्रिया आगे बढ़ रही है।

तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय बनाना महत्वपूर्ण

थिएटर कमांड व्यवस्था में किसी क्षेत्र या मिशन के लिए एक ही कमांडर होगा। इसके सेना की तीनों यूनिट्स एक साथ काम करेंगी। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ देश की तीनों सेना यानी आर्मी, नेवी और एयरफोर्स के बीच तालमेल बनाने वाला सबसे सीनियर मिलिट्री ऑफीसर होता है। यह फोर-स्टार रैंक का पद है। सीडीएस, चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी का स्थायी चेयरमैन और रक्षा मंत्रालय के डिपार्टमेंट ऑफ मिलिट्री अफेयर्स का प्रमुख भी होता है। इस पद का मकसद तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय बनाना, संयुक्त सैन्य रणनीति तैयार करना और रक्षा मामलों में फैसले लेने की प्रक्रिया को तेज करना है। दिसंबर 2019 में यह पद बनाया गया था। बिपिन रावत देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ थे। सीडीएस सरकार और रक्षा मंत्रालय को सैन्य मामलों में सलाह देता है। वह सैन्य खरीद, लॉजिस्टिक्स, संयुक्त ऑपरेशन, साइबर और स्पेस से जुड़े समन्वय पर भी काम करता है। न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी में भी सीडीएस की अहम भूमिका होती है। पहले सीडीएस बिपिन रावत जनवरी 2020 में बने थे।

क्षणिक सुख नहीं, स्थायी शांति और आत्मबल का मार्ग अपनाएं

व्यसनमुक्त समाज के लिए आध्यात्मिक जागृति आवश्यक : नीता दीदी

भोपाल। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के राजयोग भवन, सुख-शांति भवन नीलबड़ एवं अन्य प्रमुख सेवाकेंद्रो पर विशेष जनजागरण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं, विद्यार्थियों, महिलाओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों को तंबाकू सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया तथा नशामुक्त जीवन के लिए राजयोग मेडिटेशन की प्रभावी भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ राजयोगिनी आदरणीय नीता दीदी जी ने कहा कि तंबाकू एवं अन्य प्रकार के व्यसन व्यक्ति की केवल शारीरिक शक्ति को ही नहीं, बल्कि उसकी इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता को भी कमजोर कर देते हैं। आज अधिकांश लोग तनाव, चिंता, असुरक्षा और आंतरिक रिक्तता से बचने के लिए नशे का सहारा लेते हैं, जबकि वास्तविक समाधान आत्मिक जागृति और परमात्म संबंध में निहित है।

उन्होंने कहा कि राजयोग मेडिटेशन मन को परमपिता परमात्मा शिव से जोड़ने की एक सहज एवं वैज्ञानिक आध्यात्मिक विधि है। जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तब उसे शांति, शक्ति, प्रेम, सुख और आनंद की दिव्य ऊर्जा प्राप्त होती है। यही आध्यात्मिक शक्ति व्यक्ति को नकारात्मक आदतों एवं व्यसनों पर विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि नशे से मिलने वाला सुख क्षणिक होता है, जबकि परमात्म स्मृति से प्राप्त होने वाली शांति और संतुष्टि स्थायी एवं जीवनदायी होती है।

कार्यक्रम में नशा मुक्ति भारत अभियान के मास्टर वॉलंटियर डॉ. संजीव जी ने तंबाकू एवं अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नशा व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक संतुलन, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक स्थिति को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि तंबाकू सेवन कैंसर, हृदय रोग, फेफड़ों की बीमारियों तथा अनेक जानलेवा रोगों का प्रमुख कारण है। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने का आह्वान करते हुए स्वस्थ जीवनशैली, सकारात्मक सोच एवं आत्म-जागरूकता को अपनाने पर बल दिया।

जवाहर चौक सेवा केन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में न्यू एमपी एमएलए कॉलोनी के अध्यक्ष श्री विकास चौधरी जी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में नशा, तनाव और मानसिक अस्थिरता समाज के लिए गंभीर चुनौती बनते जा रहे हैं। ऐसे दौर में मन की शक्ति को बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति मानसिक रूप से मजबूत और आत्मविश्वासी हो तो वह किसी भी प्रकार की नकारात्मक आदत अथवा व्यसन से स्वयं को बचा सकता है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज द्वारा राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से मनोबल, आत्मबल एवं सकारात्मक सोच विकसित करने के प्रयासों की सराहना करते हुए इसे समय की आवश्यकता बताया।

इस अवसर पर वरिष्ठ राजयोगिनी आराधना दीदी जी ने कहा कि प्रत्येक व्यसन की जड़ मन की कमजोरी है और प्रत्येक मुक्ति की जड़ आत्मिक शक्ति। जब व्यक्ति आत्मचेतना में स्थित होकर अपने मूल गुणों–शांति, पवित्रता और आनंद–का अनुभव करता है, तब उसके भीतर आत्मसम्मान और आत्मबल का विकास होता है तथा वह सहज रूप से व्यसनों से दूर होने लगता है। उन्होंने कहा कि आज समाज को केवल नशामुक्ति ही नहीं, बल्कि विचारों की शुद्धता और जीवन मूल्यों की पुर्नस्थापना की भी आवश्यकता है।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षक रामकुमार जी ने कहा कि नशामुक्ति केवल किसी पदार्थ का त्याग नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन का नाम है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा संचालित नशामुक्ति अभियानों और राजयोग प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जुड़े अनेक लोगों ने तंबाकू एवं अन्य व्यसनों से सफलतापूर्वक मुक्ति प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि आत्मिक जागरूकता और परमात्म शक्ति के आधार पर होने वाला परिवर्तन अधिक स्थायी और प्रभावी होता है, जिससे पुनः व्यसन की ओर लौटने की संभावना भी अत्यंत कम हो जाती है।

उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति अपने मन का स्वामी बन जाता है, तब कोई भी लत उस पर शासन नहीं कर सकती। राजयोग मेडिटेशन आत्म-नियंत्रण, सकारात्मक चिंतन और श्रेष्ठ संस्कारों का विकास कर व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाता है।

अंत में वक्ताओं ने कहा कि सच्ची स्वतंत्रता किसी भी प्रकार की लत से मुक्त होकर आत्मा की मूल शांति, पवित्रता और आत्मसम्मान में स्थित रहने में है। स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त समाज का निर्माण तभी संभव है, जब व्यक्ति बाहरी नशों के स्थान पर परमात्म स्मृति, आध्यात्मिक मूल्यों और सकारात्मक जीवनशैली को अपनाए।

इसी क्रम में श्यामला हिल्स स्थित हिंदी भवन में आयोजित महिला पतंजलि योग समिति मध्यप्रदेश (पूर्व) के राज्य स्तरीय महिला महासम्मेलन एवं योग सेमिनार में भी ब्रह्माकुमारीज की सक्रिय सहभागिता रही*। कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोगिनी आदरणीय ज्योति दीदी जी, ब्रह्माकुमारी सुनीता बहन तथा ब्रह्माकुमारी डॉ. देवयानी बहन विशेष रूप से सम्मिलित हुईं। इस दौरान महिलाओं के सर्वांगीण विकास, योग, संस्कार निर्माण, आध्यात्मिक सशक्तिकरण एवं स्वस्थ जीवनशैली जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आत्मिक जागृति, मानसिक शांति तथा परमात्मा से संबंध जोड़कर जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि योग केवल शरीर को स्वस्थ बनाने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मा, मन और संस्कारों को सशक्त बनाने की एक संपूर्ण जीवन पद्धति है, जो व्यक्ति को तनावमुक्त, नशामुक्त और मूल्यनिष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान का किया अवलोकन

वैज्ञानिक आधुनिक कृषि का व्यवहारिक अनुभव किसानों को दें : राज्यपाल पटेल

प्रधानमंत्री की 'मन की बात' राज्यपाल ने सुनी किसानों के साथ

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि वैज्ञानिक आधुनिक कृषि तकनीक का व्यवहारिक अनुभव किसानों को दें। केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान द्वारा आस-पास के क्षेत्रों के किसानों को केंद्र में आमंत्रित किया जाना चाहिए। यहाँ किसानों को उनके सामर्थ्य और आवश्यकता के अनुरूप उपयोगी आधुनिक तकनीकों के बारे में बताया जाए। उन्हें कृषि यंत्रों का व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाए, ताकि किसान इनका स्वयं उपयोग करने में सक्षम हो सके। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के साथ 'मन की बात' केवल एक रेडियो कार्यक्रम नहीं, हमारे पूरे राष्ट्र की सामूहिक चेतना, शक्ति और संकल्प का प्रतीक है।

राज्यपाल श्री पटेल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम के पूर्व किसानों और कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल के साथ किसानों, कृषि वैज्ञानिकों के साथ 'मन की बात' के सामूहिक श्रवण कार्यक्रम का आयोजन रविवार को केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान के सभागार में किया गया था। इस अवसर पर संचालक कृषि कल्याण श्री उमाशंकर भार्गव भी मौजूद थे।

मन की बात राष्ट्र की सामूहिक चेतना

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से देश के सुदूर कोनों के गुमनाम नायकों की उपलब्धियों को बताते हैं, जिनके एकल प्रयासों ने समाज में बड़े बदलाव किए हैं। यह कार्यक्रम हमें सिखाता है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता, क्योंकि जब पूरा देश एक दिशा में सोचता है और सामूहिक चेतना के साथ काम करता है, तो बड़े से बड़ा बदलाव आसानी से हो जाता है।

गुजरात के कृषि मेलों की पहल का किया स्मरण

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने अपने गृह राज्य गुजरात का संस्मरण साझा करते हुए बताया कि वे गुजरात के नवसारी के रहने वाले हैं, जहाँ एक प्रतिष्ठित कृषि विश्वविद्यालय स्थित है। उन्होंने याद दिलाया कि गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2007 में ऐतिहासिक 'कृषि मेलों' की शुरुआत कराई थी। इस अभिनव पहल के तहत उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों को 'लैब से फील्ड' भेजने की शुरुआत की, ताकि वैज्ञानिक सीधे किसानों से जुड़ सकें। राज्यपाल ने बताया कि इन कृषि मेलों के माध्यम से ही गुजरात में रासायनिक उर्वरकों के विकल्प के रूप में वर्मी कंपोस्ट केंचुआ खाद के उपयोग को बड़े पैमाने पर बढ़ावा मिला, जिससे जैविक खेती की नींव मजबूत हुई। उन्होंने उल्लेख किया कि भारत के महान कृषि वैज्ञानिक, स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन जी ने स्वयं गुजरात में एक माह तक प्रवास कर इन कृषि मेलों के सकारात्मक प्रभावों और उनके दूरगामी परिणामों का अध्ययन किया था।

राज्यपाल श्री पटेल ने कार्यक्रम के पूर्व केंद्र में विकसित किए गए आधुनिक उपकरण आधुनिक कृषि उपकरणों और तकनीक का अवलोकन किया। कृषि वैज्ञानिकों का उत्साह वर्धन किया और कहा कि कृषक उपयोगी यंत्रों और तकनीक के विकास को देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई है। केंद्र के निदेशक श्री सी.आर. मेहता ने स्वागत उद्बोधन में संस्थान की उपलब्धियां और नवाचार की जानकारी दी। आभार प्रदर्शन केंद्र के परियोजना समन्वयक श्री के.एन. अग्रवाल ने किया। मन की बात के सामूहिक श्रवण कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर आई.सी.ए.आर. गान का प्रस्तुत किया गया।

केंद्र और राज्य सरकार के लिये हैं किसान कल्याण सर्वोपरि

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कृषि वैज्ञानिकों को बदलते परिवेश में खेती पर होने वाले मौसम के प्रकोप को सहने और फसलों की सुरक्षा करने की क्षमता बढ़ाने में किसानों की सहायता करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित महिला किसानों की उपस्थिति पर हर्ष व्यक्त किया। बताया कि वर्तमान में केंद्र और राज्य, दोनों ही सरकारों के केंद्र में किसान कल्याण सर्वोपरि है। सरकार किसानों के चहुंमुखी विकास और उनकी आय बढ़ाने के लिए हर संभव कदम उठाने को तत्पर रहती है। मोदी जी के नेतृत्व में खेती को लाभकारी बनाने के लिए अनेक कार्य किए गए हैं, नई योजनाएं बनी हैं। उन्नत कृषि के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश में 3 करोड़ 'ड्रोन दीदी' बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि में महिलाओं की भागीदारी को एक नई ऊंचाई पर ले जाएगा। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा कृषि कल्याण वर्ष के माध्यम से आधुनिक खेती के विकास के द्वारा किसानों की आमदनी को बढ़ाने प्रयासों की सराहना की।

मुख्यमंत्री ने रायसेन जिले की बेटी अंजना को माउंट एवरेस्ट विजय पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रायसेन जिले के ग्राम सेमरी की अंजना यादव को विश्व की सर्वोच्च चोटी माउंट एवरेस्ट पर सफलता पूर्वक चढ़ाई कर विजय प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने अंजना यादव के उज्जवल भविष्य की कामना भी की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया पर जारी संदेश में कहा कि प्रदेश की बेटी अंजना ने इतिहास रच कर देश और प्रदेश का मान बढ़ाया है। यह हम सबके लिए गर्व का विषय है। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि अंजना का साहस, संकल्प और समर्पण सभी बेटियों के लिए प्रेरणादायक है।

तम्बाकू और धूम्रपान से दूर रहें : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों से तंबाकू और धूम्रपान से स्वयं को दूर रखने और स्वस्थ जीवन के लिए दूसरों को भी प्रेरित करने की अपील की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि तंबाकू का सेवन अनेक बीमारियों की जड़ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्व धूम्रपान निषेध दिवस पर सोशल मीडिया पर जारी संदेश में कहा कि यह दिवस धूम्रपान से दूर रहने के लिए हम सबको प्रेरित और जागरूक करता है।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया पर जारी संदेश में कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर लोककल्याण, नारी सशक्तिकरण और सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित थीं। देशभर में मंदिरों, घाटों और धार्मिक स्थलों के संरक्षण और पुनर्निर्माण में उनका अतुलनीय योगदान संस्कृति के प्रति उनकी अटूट आस्था का प्रतीक है। जनसेवा और धर्म-संस्कृति के प्रति समर्पित देवी अहिल्या का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

टी राजा बोले– जिहादी अंडे, तुम्हारी भाषा में जवाब देंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के भोपाल में रविवार को प्रस्तावित धर्मसभा को पुलिस प्रशासन से अनुमति नहीं मिलने के कारण रद्द कर दिया गया। कार्यक्रम निरस्त होने के बाद तेलंगाना के विधायक टी राजा भड़क गए।

उन्होंने कुछ समुदाय विशेष के लिए आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा कि जिहादी अंडे फुदकने लगे हैं। दावा किया कि कुछ लोग धर्मसभा रद्द होने का श्रेय ले रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, तुम लोगों को तुम्हारी भाषा में अच्छे से जवाब भी दिया जाएगा।

भारतीय शिक्षण मंडल की बैठक को अखिल भारतीय संगठन मंत्री ने किया संबोधित

भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप है त्रिभाषा फॉर्मूला : बी. आर. शंकरानंद

भोपाल। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत तीन भाषा नीति एक संतुलित, समावेशी एवं भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया गया महत्वपूर्ण सुधार है। त्रिभाषा फॉर्मूले के संबंध में फैलाई जा रही सूचनाएं तथ्यहीन एवं भ्रामक हैं। यह बात भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री बी. आर. शंकरानंद ने कही। वे भारतीय शिक्षण मंडल की अखिल भारतीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री सच्चिदानंद जोशी भी उपस्थित थे।

श्री शंकरानंद ने आगे कहा कि यह नीति भारत की बहुभाषी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है जिसमें देश भर में अनेक बच्चे अपने दैनिक जीवन में दो से अधिक भाषाओं का उपयोग करते हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में संचार कौशल, मानसिक क्षमता, बहुभाषिक दक्षता का विकास करना है जिससे विद्यार्थी उच्च शिक्षा, रोजगार एवं समाज को और बेहतर बनाने के लिए तैयार हो सकें। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन भाषा फॉर्मूले के लागू किए जाने पर विरोध करने का कारण अंग्रेजी शिक्षित अभिजात्य वर्ग की 'मैकाले मानसिकता' है। यह नीति भारतीय भाषाओं को प्रोत?साहित करती है और बहुभाषिक दक्षता को मजबूती देती है। इसके साथ ही विद्यार्थियों के विकल्पों का विस्तार करती है तथा देशभर में समान समावेशी शिक्षा को समर्थन देती है। शंकरानंद ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा- स्कूल शिक्षा 2023 (एनसीएफ-एसई) में शिक्षण एवं अधिगम में बहुभाषिकता और भाषा के महत्व पर बल दिया गया है। नीति के अनुसार तीन भाषा सूत्र को अधिक लचीला बनाकर लागू किया गया है।

श्री शंकरानंद ने कहा कि किसी भी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी। विद्यार्थियों को कम से कम दो भारतीय भाषाएं सीखने का अवसर मिलेगा। त्रिभाषा नीति देश को भविष्य में औपनिवेशिकता से बाहर निकालते हुए एक सुदृढ़ देश के निर्माण में सहयोगी बनेगी। एनसीएफ-एसई 2023 का उद्देश्य माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों में तीन भाषाओं में शैक्षणिक दक्षता, भाषायी कौशल तथा भारतीय भाषाओं ओर साहित्य की समझ विकसित करना है।

उन्होंने कहा कि तमिलनाडु और पुडुच्चेरी को छोड़कर भारत के सभी राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पहले से ही कक्षा 6 से 10 अथवा कक्षा 8 से 10 तक तीन भाषा नीति का पालन करते हैं। ये राज?य माध्यमिक स्तर पर तृतीय भाषा में कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा आयोजित कराते हैं। पिछले शैक्षणिक सत्र तक सीबीएसई में कक्षा छह से कक्षा 12वीं तक तीन भाषाएं और कक्षा 9-10 वीं में केवल दो भाषाएं पढ़ाई जाती थीं। इससे सीबीएसई एवं राज्य के शिक्षा बोर्डों के विद्यार्थियों के बीच असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई थी। नई व्यवस्था देशभर में स्कूली शिक्षा में समानता एवं भाषायी एकरूपता स्थापित करेगी।

बैठक को संबोधित करते हुए श्री बी. आर. शंकरानंद ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एनसीएफएसई के प्रावधानों के अनुरूप सीबीएसई इस नीति को लागू कर रही है। सीबीएसई की वर्तमान तीन भाषा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों को कक्षा एक से पांच तक दो भाषाएं (आर 1 और आर 2) तथा कक्षा छह से कक्षा दसवीं तक तीन भाषाएं (आर 1, आर 2 और आर 3) पढ़नी होंगी। इस नीति में भाषा चयन करने की सुविधा प्रदान की गई है।

कलियासोत रिवर रैली का आयोजन

• स्वच्छता सफ़ाई के साथ नदी जीर्णोद्धार का संकल्प

भोपाल। भोपाल की सुबहें बहुत सुकून वाली होती हैं, पर इस संडे की सुहानी सुबह में सूरज के आगमन के साथ नदी संरक्षण, जल संवर्धन एवं जनभागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डॉ उदय रोमन , जल संरक्षण विशेषज्ञ के नेतृत्व में दिनांक 31 मई 2026 को कलियासोत रिवर रैली (केआरआर) का आयोजन किया गया जिसमे लगभग सौ से ज़्यादा पर्यावरण प्रेमियों ने मिलकर अपने शहर की एक पुरानी धरोहर हमारी कलियासोत नदी को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया ।

रैली का मार्गदर्शन कर रहे अमेय जल के डॉ अशोक विश्वकर्मा जी ने बताया कि अब वक्त आ गया है जब हम सिर्फ बातें करना छोड़ें और ज़मीन पर उतरकर कुछ ऐसा करें जिससे हमारी आने वाली नस्लों को भी इस मिट्टी की सौंधी खुशबू का अहसास मिलता रहे। केआरआर (कलियासोत रिवर रैली) - पेस 1 जो की सिर्फ एक रैली नहीं है, हमारे अपने भोपाल की लाइफलाइन को सहेजने की एक दिल से की गई कोशिश है । रविवार सुबह 6 बजे श्री अशोक मिश्रा (आईएफ़एस) के निर्देशन में रैली की शुरुआत कलियासोत 13 गेट से की गई । सुबह 06:30 बजे बाघ क्षेत्र के पास कुछ पल रुक कर सड़क के समीप पड़े कचरे को साफ़ करते

हुए स्वच्छता सैनिक साइकिल पर एवं पैदल कलियासोत नदी के आंचल में नीचे उतरे । यहाँ से श्री पवन साहितानी , प्रियंका विजय जी, महेंद्र गोगिया जी, संकल्प विनी जी और श्री अमित शर्मा जी के साथ 1.5 किमी का एक सुकून भरा पैदल और साइकिल ट्रैकिंग सफर शुरू हुआ साथ साथ नदी के पानी में पड़े हुए कचरे को भी उठाया गया । इस रैली में छोटे बच्चे, युवा , महिलाएँ एवं सीनियर सिटीजन ने बढ चढ़कर हिस्सा लिया ।

रैली के पहले पड़ाव पर सुबह 07:30 बजे कैपिटल प्रोजेक्ट के शांत फॉरेस्ट एरिया की एक पुरानी, ऐतिहासिक बावड़ी के पास सभी ने विश्राम किया और विशेषज्ञों के साथ कलितासोत नदी के दायें किनारे पर साइकिल ट्रैक, वॉक प्लाजा , ग्रीन कॉरिडोर और विश्राम एरिया विकसित करने के बारे में विचार साझा किए ।

सुबह 07:45 बजे: थोड़ी सी एनर्जी और ढेर सारी उम्मीदें समेटकर, फिर से ये टीम ने नदी के मुहाने पर 2.5 किमी का आगे का सफर किया और गीत गाते हुए स्वच्छता भी करते गए ।

सुबह 08:15 बजे: आखिरी छोर (ब्रिज) पर पहुँचकर ठंडी कोल्ड ड्रिंक्स के साथ खुद को तरोताज़ा किया और मिलकर ब्रिज के नीचे व दाहिने किनारे की सफाई (श्रमदान) किया ।

सुबह 08:30 बजे: अपनी नदी को हमेशा साफ रखने की एक सच्ची शपथ के साथ पहले चरण को पूरा किया ।

इस पूरी रैली में श्री अशोक मिश्रा (आईएएस), डॉ. ए. के. विश्वकर्मा,पवन साहितानी और डॉ उदय रोमन जैसे आदरणीय विशेषज्ञों ने सर्वेक्षण कर निम्न बिन्दुओं पर आगे का प्लान बनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया ।

प्रधानमंत्री मोदी के प्रेरणादायी विचारों को आत्मसात करें : उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल

भोपाल। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम मन की बात का उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा में जनप्रतिनिधियों व आमजनों के साथ श्रवण किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री जी समाज, राष्ट्र निर्माण, जनभागीदारी एवं प्रेरणादायक प्रयासों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार साझा करते हैं जो हम सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं उनके इन विचारों को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री जी के मन की बात के 134वें संस्करण का जनपद पंचायत रीवा के प्रांगण में श्रवण करने के उपरांत श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री जी की नजर देश में हो रहे उन विशिष्ट कार्यों पर रहती है जिन पर किसी की भी नजर नहीं जा पाती। उन्होंने मन की बात में उत्कृष्ट कार्य करने वाले खिलाड़ियों सहित अन्य क्षेत्रों के लोगों से चर्चा की। वह देश के कोने-कोने में बेहतर कार्य करने वालों का जिक्र करते हैं तथा उनका हौसला बढ़ाते हैं। प्रधानमंत्री जी एक-एक मिनट का सदुपयोग कर देश को उत्कृष्ट राष्ट्र बनाने के लिए कृत संकल्पित हैं। श्री शुक्ल ने कहा कि हम सबकी भी जिम्मेदारी है कि जो जिस पद पर है वह वहां बेहतर से बेहतर कार्य करें। कृषि कल्याण वर्ष में हमारे प्रदेश में रिकार्ड गेंहू की खरीदी हुई है। हमारा रीवा क्षेत्र बाणसागर की नहरों से समृद्धशाली बना है। अब इस विकास का फल आने वाली पीढ़ी को मिलेगा। युवाओं को नशे सहित अन्य सामाजिक कुरीतियों से दूर रहना होगा। श्री शुक्ल ने जल संग्रहण व संरक्षण के कार्यों में आमजनों से सहभागिता की अपील की तथा कहा कि वर्षाकाल आने पर पेड़ लगाकर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें। इस अवसर पर जिला भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गुप्त, जनपद अध्यक्ष संगीता यादव, पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी, जनपद सीईओ पूनम दुबे सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी व आमजन उपस्थित रहे।

खाद्य पदार्थ सस्ते दामों पर उपलब्ध कराए सरकार : अजय सिंह

भोपाल। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने राज्य में लगातार बढ़ रही कमरतोड़ महंगाई पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि पेट्रोल और डीजल के दामों में हुई बेतहाशा वृद्धि का सीधा असर आम जनता के रोजमर्रा के बजट पर पड़ा रहा है। परिवहन लागत बढ़ने के कारण बाजार में आवश्यक वस्तुओं और खाद्यान्न के दाम दो गुना तक बढ़ गए हैं, जिससे आम नागरिक का जीना मुहाल हो गया है।

उन्होंने कहा कि महंगाई से राहत के लिए सरकार पेट्रोल और डीजल पर वेट टैक्स में तत्काल 50 प्रतिशत की कटौती करे। इससे बाजार में सभी आवश्यक वस्तुओं के दाम अपने आप नीचे आ जाएंगे। इसके अलावा सरकार तुरंत सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गेहूं, चावल, दाल, खाद्य तेल और शक्कर को नियंत्रित दामों पर आम जनता को उपलब्ध कराए। अजय सिंह ने कहा कि इस भीषण महंगाई की सबसे मारक चोट गरीब परिवारों पर पड़ी है। इसके साथ ही अन्य वर्ग भी इस आर्थिक संकट की चपेट में आकर पूरी तरह त्राहि-त्राहि कर रहा है। ये सभी अपने आप को असहाय महसूस कर रहे हैं।

संपादकीय

पंजाब: आप की पकड़ बरकरार

पंजाब में हाल में सम्पन्न स्थानीय निकाय चुनावों में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) की शानदार जीत से साफ हो गया है कि राज्य में आप की पकड़ मजबूत है और अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में उसे चुनौती देना विपक्षी पार्टियों के लिए आसान नहीं होगा। हालांकि इन नतीजों से पंजाब की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस में कोहराम मचा है, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि अगर सत्ता के इस सेमीफाइनल में वो अच्छा प्रदर्शन करती है तो अगले साल विधानसभा चुनाव में उसकी सत्ता में वापसी के आसार प्रबल होंगे। लेकिन कांगेस नगरीय निकायों पर कब्जे के मामले में दूसरे नंबर पर रही है, जबकि बंगाल चुनाव में बंपर जीत के बाद पंजाब भी जीतने के दावे करनी वाली भाजपा चौथे क्रंमाक पर रही है। उसके लिए राहत की बात इतनी है कि एक नगर निगम पर उसने भगवा फहरा दिया है, इससे उसका हौसला जरूर बढ़ा है। जबकि बरसों भाजपा के साथ में और सत्ता में रही शिरोमणि अकाली दल (शिअद) तीसरे नंबर पर रही है। पंजाब में कुल 102 नगरीय निकायों के लिए चुनाव सम्पन्न हुए थे। इनमें से कुल 925 सीटें जीत कर पहले नंबर पर रही है। 374 सीटें जीतकर कांग्रेस ने दूसरे और 189 सीटों पर विजय प्राप्त कर अकाली दल तीसरे नंबर पर रही है। जबकि भाजपा को 167 सीटों पर और निर्दलीय उम्मीदवारों को 248 सीटों पर जीत हासिल हुई है। यानी संख्या के हिसाब तो निर्दलीय तीसरे नंबर पर रहे हैं, जिनकी संख्या कांग्रेस के विजयी प्रत्याशियों से थोड़ी ही कम है। अगर यही ट्रेंड विधानसभा चुनाव में रहा तो राज्य में विस चुनाव बेहद दिलचस्प होंगे। इन नतीजों के बाद राज्य में सत्तासीन आप के हौसले बुलंद हो गए हैं। यह भी साफ हो गया है कि पिछले दिनो आप के सात राज्यसभा सांसदों के भाजपा में पाला बदल का कोई असर इन चुनावों में नहीं दिखाई दिया। वैसे भी यह कहा जा रहा था कि जो सांसद भाजपा में गए हैं, उनकी पंजाब में कोई राजनीतिक जमीन नहीं है। आप की जीत के साथ महीनों से लगभग खामोश बैठे आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने एक वीडियो में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर यह कहकर हमला किया कि देश को एक पढ़ा-लिखा प्रधानमंत्री चाहिए, ताकि प्रवेश परीक्षाओं में धांधलियों को रोका जा सके। जबकि इन नतीजों के बाद विपक्षी कांग्रेस में अंतर्कलह शुरू हो गई है। इस हार के लिए वरिष्ठ नेता एक दूसरे को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। अगर कांग्रेस में यह गुटबाजी और कलह नहीं रूकी तो अगले विधानसभा चुनाव में भी उसके जीतने की संभावनाएं न्यून हो जाएंगीं। इसी प्रकार अकालीदल भी सुखबीर सिंह बादल के नेतृत्व में कुछ खास नहीं कर पा रहा है। भाजपा से अपना बरसों पुराना गठबंधन तोड़ने के बाद राजनीतिक रूप से अकाली दल को कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। आगे भी खास संभावनाएं नहीं दिख रही हैं। इस बीच भाजपा ने पंजाब में अपनी स्थिति कुछ मजबूत की है। इसके अलावा उसने डॉ.केवल सिंह ढिल्लो को पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष बनाकर नया दांव खेला है। भाजपा की कोशिश अब सिख वोटों को बांटने की है। डॉ.केवल सिंह ने कहा कि पंजाब में भाजपा रामराज्य और सरकार ए खालसा के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ेगी। अभी तक भाजपा वहां मुख्य रूप से हिंदू वोटों को एक करने के मकसद से काम कर रही थी। इसलिए सुनील जाखड़ को प्रदेशाध्यक्ष बनाया गया था। लेकिन अब पार्टी सिखों के बीच सेंधमारी करने की राह पर आगे बढ़ रही है। उसका मानना है कि हिंदू वोट उससे नहीं छिटकेगा। पार्टी की इस रणनीति का कितना असर होता है, यह देखना होगा।

आस्थाएं और परम्पराएं धर्म नहीं होती

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय में नौ जजों की पीठ ने सुनवाई करते हुये कहा कि अगर लोग धार्मिक प्रथाओं या धर्म से जुड़े मामलों को लेकर संवैधानिक अदालत में सवाल उठाने लगेंगे तो अलग-अलग राज्यों में सैकड़ों याचिकायें आ जायेंगी। इससे धर्म और सभ्यता के टूटने की स्थिति बन जायेगी। हालांकि खंडपीठ की बैठक में कुछ ही दिनों पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने टिप्पणी की थी कि आस्था और परंपराओं को सुनना संवैधानिक अधिकार है। इनके इस यूटर्न के पीछे क्या कारण है, यह वही बता सकते हैं।

इस नौ सदस्यीय बैंच की अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री सूर्यकांत कर रहे थे और यह बैंच सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश को लेकर याचिका की सुनवाई कर रही है साथ ही दाउदी बोहरा समुदाय की 1986 में दाखिल की गई पीआईएल, की भी सुनवाई कर रही है, जिसमें उन्होंने धर्म से बहिष्कृत करने के कानून पर रोक लगाने के संबंध में बोम्बे हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी है।

यह पीठ अलग-अलग धर्मों की धार्मिक स्वतंत्रता की सीमा और उनके दायरे पर भी सुनवाई कर रही है। सुनवाई अभी जारी है परंतु सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी चिंताजनक है। इसके पहले सर्वोच्च न्यायालय कई ऐसे निर्णय कर चुका है जिनमें कानूनी प्रावधानों को छोड़कर आस्था, विश्वास या जनमत के बहुमत की अपेक्षा के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने फैसले दिए हैं। पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वाई वी चंद्रचूर्ण ने तो सेवानिवृत्ति के बाद अपने एक साक्षात्कार में कहा भी था कि अयोध्या के मामले में फैसला देना बहुत कठिन था क्योंकि यह करोड़ों लोगों की आस्था का सवाल था। याने एक प्रकार से परोक्ष रूप से उन्होंने यह स्वीकार किया कि अयोध्या मामले का सुप्रीम कोर्ट का फैसला वैधानिक आधार पर नहीं बल्कि आस्थाओं के आधार पर था। अब उसी बात को वर्तमान सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भिन्न शब्दों में दोहरा रहे हैं।

मैं सर्वोच्च न्यायालय की इस टिप्पणी के पीछे न केवल असंवैधानिक दृष्टिकोण देख रहा हूँ, बल्कि कई प्रकार के भविष्य के खतरे भी देख रहा हूँ। कल अगर किसी विश्व के न्यायिक मंच पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों की पृष्ठभूमि पर चर्चा होगी तो क्या भारत की संपूर्ण न्यायपालिका एक असंवैधानिक निर्णय लेने वाली कमजोर न्यायपालिका के रूप में नहीं जानी जायेगी?

दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि आस्था और विधान में फर्क होता है। आस्थायें समग्र समाज के छोटे-बड़े हिस्सों की अलग अलग हो सकती है परंतु संविधान के प्रावधान और विधान जो देश की निर्वाचित संसद के बहुमत के आधार पर बनाया जाते है उसका जनसमर्थन का दायरा समूहों की तुलना में कहीं अधिक हो जाता है। जब भारत का संविधान बना था तब तत्कालीन संविधान सभा ने लगभग आम राय से संविधान को स्वीकृत किया था। अनेक सवालों पर परस्पर मतभेद थे, लंबी-लंबी बहसें हुईं और अंत में सबने मिलकर एक राय से फैसला किया। ये निर्णय एक प्रकार से समूचे देश के निर्णय थे, किसी समुदाय विशेष के नहीं। हालांकि अनेकों ऐसे कानून हैं जो बहुमत ने पारित किये और उनके पीछे उतनी सार्वदैशिक सहमति भले ही न हो जो संविधान निर्माण के समय रही थी परंतु देश के जनमत के बहुमत का समर्थन उसके पीछे था।

आस्थाओं का कोई आधार नहीं होता और परंपरायें भी कई बार समाज अपने समय के अनुकूल व जरुरतों के आधार पर बनाता है। जिनमें सभ्य समाज समय समय पर, वर्तमान काल के अनुसार परिवर्तन करता है, और यही प्रगतिशीलता है।

नौ सदस्यीय बैंच की अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री सूर्यकांत कर रहे थे और यह बैंच सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश को लेकर याचिका की सुनवाई कर रही है साथ ही दाउदी बोहरा समुदाय की 1986 में दाखिल की गई पीआईएल, की भी सुनवाई कर रही है, जिसमें उन्होंने धर्म से बहिष्कृत करने के कानून पर रोक लगाने के संबंध में बॉम्बे हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी है।

जब ब्रिटिशकाल में राजा राममोहनराय के मुकदमे में ब्रिटिश सरकार ने सती प्रथा पर रोक लगाई थी तो वह एक प्रकार से हिंदु समाज की आस्थाओं और परंपराओं पर रोक थी। हिंदू समाज में और विशेषतरू बाम्हो समाज व अन्य कई समाज में यह परंपरा थी कि पति की मृत्यु के बाद पत्नी को पति के साथ अग्नि में प्रवेश करना चाहिए। यह उनके सतीत्व की कसौटी या परीक्षा भी थी और उनके देवी बनने की प्रक्रिया थी जो महिलायें सती बनती थीं उन्हें सती माता या सती देवी के रूप में समाज पूजता था। ज्यादातर सती हुई महिलाओं के मंदिर बने हैं। सती सावित्री का किस्सा तो अमूमन उद्धित किया जाता है।

दरअसल यह परंपरा पुरुष प्रधान समाज या पुरुष एकाधिकारी समाज में उपजी थी जिसमें स्त्री का भविष्य पुरुष के साथ जुड़ा था। मान लो कल कोई याचिका सती प्रथा समाप्त करने वाले उस ब्रिटिश कानून के खिलाफहो या कुछ लोग यह कहें कि यह हमारी आस्था व परंपरा है तो क्या भारत का सर्वोच्च न्यायालय उस ब्रिटिश काल के कानून को रद्दकर सती प्रथा को पुनरूचालू करने की अनुमति देगा? जो टिप्पणी सबरीमला मंदिर के मामले में या दाउदी बोहरा समाज की अपील मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने की है वह तो यह संकेत देती है कि सर्वोच्च न्यायालय ऐसी याचिका को स्वीकृत कर सकता है।

ऐसे कितने प्रकरण बताये जा सकते हैं जहां पर परंपराओं को जो कालवाह्य हो चुकी है या अमानवीय थी या अतार्किक थी उन्हें कानून के माध्यम से रोकने का काम न्यायपालिका और विधायिका ने किया है। एक जमाने में हमारे देश के गाँव-गाँव में बेगार प्रथा थी। मजदूरों को जमींदारों के लिये बगैर पारिश्रमिक बेगारी करना होती थी, हमारे यहां बंधुआ मजदूरी भी थी, संसद ने कानून बनाकर बेगार प्रथा पर प्रतिबंध लगाया। बंधुआ मजदूर कानून तो सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टि पी एन भगवती की पहल पर भारत की सरकार और संसद ने बनाया था और एक अर्थ में देश की यह प्रगतिशीलता थी। क्या कल आस्था और परंपरा के नाम पर सर्वोच्च न्यायालय बेगारी प्रथा उन्मूलन कानून या बंधुआ उन्मूलन कानून को समाप्त करने की अनुमति देगा?

जो टिप्पणी सर्वोच्च न्यायालय ने की है अगर उसे व्यापक फलक पर देखा जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वोच्च न्यायालय इन प्रगतिशील कानूनों को आस्था व परंपरा के नाम पर रद्द कर सकता है। ऐसी कुपरंपरायें केवल हमारे हिंदु धर्म या समाज में नहीं बल्कि कमोवेश सभी धर्मों में रही है। जिन्हें प्रगतिशील आंदोलनों ने बदलने के लिये अभियान चलाये हैं। आज ईरान में बुर्का तो छोड़ो हिजाब के खिलाफभी लड़कियां आंदोलन कर रही हैं। महीसा अमीनी की मौत पुलिस हवालात में हुई और लगभग 4500 लड़कियां मारल पुलिस की कार्यवाही के नाम पर जेल में है। क्या सर्वोच्च न्यायालय यह चाहेगा कि हिंदुस्तान में ऐसी मारल पुलिस शुरू हो? 18वीं और 19वीं सदी के आरँभ तक देश में या हमारे भारतीय समाज में, पर्दा प्रथा आम थी जिसे 19वीं सदी के मध्य के बाद समाज ने काफी हद तक त्याग दिया। कल कोई याचिका पेश करके कहे कि पर्दा प्रथा हमारी आस्था है और परंपरा है, तो क्या सर्वोच्च न्यायालय उसे स्वीकृति प्रदान करेगा? दाउदी बोहरा समाज में कुछ परंपरायें काफी अमानवीय थी और जिसके खिलाफउनके समाज के भीतर से ही लोगों ने अभियान व आंदोलन शुरू किये थे। आंदोलन करने वाले दाउदी बोहरा समाज के कई प्रमुख लोगों को शारीरिक हमले तक सहने पड़े और अपमानित होना पड़ा था। तब जाकर ऐसी अमानवीय परंपराओं पर रोक लगी थी। समाज से बहिष्कृत किये जाने के भय से लोग उन परंपराओं को मानने के लिये बाध्य होते थे। एक लंबे आंदोलन के बाद 1962 में बाम्बे धर्म बहिष्कार निवारण अधिनियम 1949 को रद्द कर दिया गया तथा ऐसी अनुचित अमानवीय परंपराओं को न मानने के आधार पर उन्हें धर्म से बहिष्कृत करने पर वैधानिक रोक लगाई गई थी। अब क्या सर्वोच्च न्यायालय आस्था के नाम पर फिर उस दौर को वापिस लायेगा? ऐसी परंपरायें अन्य धर्मों में भी हैं। इस्लाम में भी हलाला की परंपरा आज के समाज में उचित नहीं मानी जा सकती। बहुत सारे मुस्लिम भाई भी इस परंपरा से दुखी हैं और अपनी बातचीत में इसे गलत बताते हैं। परंतु धर्म और आस्था के नाम पर भयभीत होकर घुटते रहते हैं। सार्वजनिक रूप से कुछ कह नहीं पाते। ऐसे कई मित्रों व उनकी पीड़ा को मैं निजी रूप से जानता हूँ।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय को भी विचार करना चाहिए कि आस्था या परंपरायें परंपरा धर्म नहीं होती। परंपरायें वे एक दौर के समाज के द्वारा किसी कालखण्ड में, तात्कालिक उपयोगिता के कारण बनाई गई होती है। धर्म तो मानवता है, समता है, अन्याय का प्रतिकार है और दूसरे के दुखों में सहभागिता है। आस्थायें भी धर्म नहीं होती। आस्थाओं को तो समाज व्यक्ति को उसके जन्म के साथ और उसके परिवार की परंपराओं व चलन के साथ प्रेरित करता है। क्या आस्था का कोई अंत हो सकता है? आस्था तार्किक और अतार्किक दोनों हो सकती है। कुछ वर्षों पूर्व छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक घटना घटित हुई थी। वहां सवर्ण समाज के एक व्यक्ति की जमीन पर कुछ सतनामी भाईयों ने जैतखंभ गाड़ दिया और इसका कारण बताया गया कि एक व्यक्ति ने कहा है कि मुझे स्वप्न आया कि यहां पर जैतखंभ था तथा बड़ी संख्या में लोग उस जमीन पर अपनी धार्मिक क्रियायें करने लगे। जमीन के मालिक बेचारे दर-दर भटके। विधायक, सांसद, सरकार तक को याचनायें की परंतु कोई परिणाम नहीं निकला। क्योंकि वोट के लिये सभी चुप थे। अंत में बिलासपुर उच्च न्यायालय ने उस पर रोक लगाई, फलस्वरूप जमीन के वैधानिक मालिक को उसका अधिकार व जमीन वापिस मिल सकी। क्या अब इस आस्था के तर्क पर सारे कायदे कानून समाप्त हो जायेंगे इससे एक प्रकार की अराजकता पैदा नहीं होगी?

सर्वोच्च न्यायालय ने धार्मिक प्रथाओं के बारे में सुनवाई करते हुये कहा कि अगर धार्मिक प्रथाओं पर कोर्ट में सवाल उठे तो धर्म और सभ्यता टूट सकती है। यह माननीय सर्वोच्च न्यायालय का बहुत ही अवैधानिक कथन है। आस्थाओं को तर्क की कसौटी पर कसने, परंपराओं को वर्तमान के काल की जरूरतों के चश्मे से देखने से धर्म टूटेगा नहीं बल्कि धर्म मानवीय, व्यापक व विस्तारित होगा। सभ्यता नहीं टूटेगी बल्कि सभ्यता में छिपी या घुसी हुई जो असभ्य प्रवृत्तियां हैं वह हटेगी और सभ्यता परिष्कृत होगी।

अन्नदाता ही नहीं, ऊर्जादाता भी बनें किसान

कृषि

मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

भारत का किसान सदियों से देश का पेट भरता आया है, लेकिन विडंबना यह है कि वही किसान आज भी अपनी आय, सम्मान और भविष्य की लड़ाई लड़ रहा है। खेतों में हरियाली उगाने वाले हाथ आज भी आर्थिक असुरक्षा से घिरे हैं। प्रश्न यह है कि क्या इक्कीसवीं सदी में भी किसान की भूमिका केवल अनाज पैदा करने तक सीमित रहनी चाहिए? जब दुनिया ऊर्जा, तकनीक और हरित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रही है, तब भारतीय किसान को केवल 'अन्नदाता' कहकर छोड़ देना उसके सामर्थ्य को कहीं ना कहीं सीमित करना है। समय की मांग है कि किसान को 'ऊर्जादाता' और 'ईंधनदाता' के रूप में भी देखा जाए। और उन्हें उसी क्रम में सशक्त बनाने की और क़दम उठायें जाएँ।

भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश है। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2024-25 में देश में लगभग 330 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न उत्पादन हुआ। लेकिन इसी भारत में हर वर्ष करोड़ों टन कृषि अवशेष या तो सड़ जाते हैं या जला दिए जाते हैं। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पराली जलाने की समस्या केवल प्रदूषण का मुद्दा नहीं, बल्कि नीति और दृष्टि की कमी का भी परिणाम है। जिस पराली को किसान मजबूरी में आग के हवाले करता है, वही यदि बायो-सीएनजी, बिजली और इथेनॉल उत्पादन में उपयोग हो, तो किसान प्रदूषण का कारण नहीं बल्कि समाधान बन सकता है। हम यहाँ पराली जलाने को प्रदूषण फैलाने का प्रमुख कारक नहीं मान रहे बल्कि उस क्रम को दूसरे उपक्रम से जोड़ने की ओर देख रहे हैं।

भारत सरकार ने बीते वर्षों में जैव ईंधन को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण वर्ष 2014 में जहां लगभग 1.5 प्रतिशत था, वहीं 2025 तक यह 20 प्रतिशत लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। नीति आयोग और पेट्रोलियम मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार इससे अब तक हजारों करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है और गन्ना किसानों को अतिरिक्त आय मिली है। केवल गन्ना ही नहीं, मक्का, टूटे चावल और कृषि अपशिष्ट भी अब ऊर्जा अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन रहे हैं।

यह बदलाव केवल आर्थिक नहीं, वैचारिक भी है। भारतीय साहित्य ने हमेशा किसान को संघर्ष और संवेदना के केंद्र में रखा है। प्रेमचन्द की गोदान का होरी केवल एक किसान नहीं, भारतीय गांव की आत्मा के रूप में हमने पढ़ा है। होरी का सपना बहुत बड़ा नहीं था, बस सम्मान के साथ जी लेना चाहता था। लेकिन आज का किसान केवल जीवित रहने की नहीं, आगे बढ़ने की आकांक्षा रखता है।

दुनिया के कई देशों ने कृषि को ऊर्जा और तकनीक से जोड़कर किसानों की आय में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। ब्राजील इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। वहां गन्ने से बनने वाला इथेनॉल दशकों से वाहनों के ईंधन के रूप में प्रयोग हो रहा है। ब्राज़ील के लगभग 70 प्रतिशत से अधिक वाहन 'फ्लेक्स फ्यूल' तकनीक पर चलते हैं। वहां किसान केवल खाद्य उत्पादन का हिस्सा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा का भी भागीदार है।

जर्मनी में 9 हजार से अधिक बायोगैस संयंत्र कृषि और पशु अपशिष्ट से बिजली उत्पादन कर रहे हैं। वहां गांवों में किसान अपनी डेयरियों और खेतों के अवशेष से ऊर्जा बनाकर राष्ट्रीय ग्रिड तक बिजली पहुंचाते हैं। इसी प्रकार नीदरलैंड में सीमित भूमि के बावजूद तकनीकी खेती और ग्रीनहाउस मॉडल के माध्यम से कृषि निर्यात में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

उधर इजराइल ने यह साबित किया कि पानी की कमी भी खेती को रोक नहीं सकती। वहां ड्रिप इरिगेशन, सेंसर तकनीक और डेटा आधारित खेती ने कृषि को अत्यधिक उत्पादक बना दिया। भारतीय किसान यदि ऐसी तकनीकों से जुड़े, तो कम पानी और कम लागत में अधिक उत्पादन संभव है।

भारत में भी परिवर्तन की शुरुआत दिखाई दे रही है। राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में किसान 'सोलर फार्मिंग' के माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे हैं। 'पीएम-कुसुम योजना' के तहत लाखों सौर पंप लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इससे किसानों का डीज़ल खर्च घट रहा है और कई स्थानों पर किसान बिजली बेचकर भी आय प्राप्त कर रहे हैं।

मैला आँचल पढ़ते हुए गांव की मिट्टी, श्रम और सामूहिक जीवन की महक महसूस होती है। फणीश्वर नाथ रेणु के गांव में किसान प्रकृति से जुड़ा हुआ है, लेकिन आज वही गांव तकनीक से भी जुड़ सकता है। खेतों में फसल के साथ सोलर पैनल, गांवों में बायोगैस संयंत्र और कृषि अवशेष से ईंधन उत्पादन यह केवल कल्पना नहीं, आने वाले भारत की वास्तविकता हो सकती है।

अब कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। अमेरिका, जापान और चीन जैसे देशों में ढ्ढ आधारित खेती ने उत्पादन लागत घटाई है और गुणवत्ता बढ़ाई है। सेंसर और ड्रोन की मदद से मिट्टी की नमी, पौधों की स्थिति और रोगों की पहचान पहले ही कर ली जाती है। एआई यह अनुमान भी लगा सकता है कि मौसम का फसल पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इससे किसान समय रहते निर्णय ले सकता है।

भारत में भी कई स्टार्टअप एआई आधारित कृषि तकनीकों पर काम कर रहे हैं। ड्रोन द्वारा कीटनाशक छिड़काव, मोबाइल एप के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और उपग्रह आधारित फसल विश्लेषण अब धीरे-धीरे गांवों तक पहुंच रहे हैं। यदि इन तकनीकों को पंचायत स्तर तक ले जाया जाए, तो खेती जोखिम आधारित नहीं बल्कि वैज्ञानिक और डेटा आधारित बन सकती है।

लेकिन केवल तकनीक उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती कृषि शिक्षा को बदलने की है। आज भी अधिकांश कृषि विश्वविद्यालय पारंपरिक पाठ्यक्रमों में उलझे हुए हैं। कृषि शिक्षा में ढ्ढ, ड्रोन तकनीक, सोलर एनर्जी, बायोफ्यूल, एग्री-बिजनेस, डेटा एनालिटिक्स और जल प्रबंधन को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। आईसीएआर द्वारा मान्यता प्राप्त कृषि संस्थान इस दिशा में कार्य भी कर रहे हैं, लेकिन इसमें और तेजी की जरूरत है।

कृषि के छात्रों को केवल खेत तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उन्हें ऊर्जा उद्योग, ग्रामीण स्टार्टअप और तकनीकी नवाचार से भी जोड़ा जाना चाहिए। गांव आधारित इंटर्नशिप, स्थानीय समस्या समाधान और कृषि उद्यमिता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना समय की आवश्यकता है। यदि कृषि शिक्षा रोजगार और नवाचार से नहीं जुड़ेगी, तो युवा खेती से दूर होते जाएंगे।

भारतीय सिनेमा और साहित्य ने किसान की पीड़ा को हमेशा आवाज दी है। फ़िल्म दो बीघा जमीन का शंभू महतो हो या राग दरबारी के गांव, हर जगह किसान व्यवस्था और अभाव से लड़ता दिखाई देता है। लेकिन अब समय किसान की नई छवि गढ़ने का है। ऐसी छवि जिसमें वह तकनीक से जुड़ा हो, ऊर्जा उत्पादक हो और आत्मनिर्भर ग्रामीण उद्यमी भी।

आज गांवों से युवाओं का पलायन इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि खेती उन्हें सम्मानजनक आय नहीं दे पा रही। यदि कृषि को ऊर्जा, तकनीक और उद्योग से जोड़ा जाए, तो गांवों में ही रोजगार पैदा होंगे। बायोगैस प्लांट, एथेनॉल इकाइयां, ड्रोन सेवा केंद्र और सोलर परियोजनाएं गांवों को नए आर्थिक केंद्रों में बदल सकती हैं।

महात्मा गांधी ने कहा था कि 'भारत का हृदय गांवों में बसता है।' लेकिन उस हृदय को नई ऊर्जा देने की आवश्यकता है। किसान के हाथ में हल के साथ तकनीक भी हो, खेत में फसल के साथ ऊर्जा भी हो और गांव में परंपरा के साथ आधुनिकता भी, यही भविष्य के भारत की पहचान होगी।

जिस दिन भारत का किसान केवल अन्नदाता नहीं बल्कि ऊर्जादाता और ईंधनदाता बन जाएगा, उस दिन देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और ग्रामीण समाज, तीनों को नई दिशा मिलेगी। तब गांव केवल उपभोग का केंद्र नहीं, बल्कि ऊर्जा, नवाचार और आत्मनिर्भरता की प्रयोगशाला बनेंगे। और शायद तब प्रेमचंद का होरी भी अपने संघर्षों से मुक्त होकर यह महसूस कर सकेगा कि भारतीय किसान अब केवल जीवित नहीं, बल्कि सम्मान और शक्ति के साथ आगे बढ़ रहा है।

जब बेटी टूटती है तब...

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

कभी भारतीय समाज में विवाह केवल दो लोगों का साथ नहीं माना जाता था, बल्कि यह दो परिवारों, दो संस्कृतियों और दो आत्माओं का पवित्र मिलन समझा जाता था। बेटी की विदाई आँसुओं से भले होती थी, पर उन आँसुओं के पीछे एक गहरा विश्वास छिपा रहता था—यह विश्वास कि जिस घर में बेटी जा रही है, वहाँ उसे सम्मान मिलेगा, अपनापन मिलेगा, और जीवन भर उसका हाथ थामने वाला साथी मिलेगा।

लेकिन आज धीरे-धीरे यह विश्वास दरकता जा रहा है। आज की बेटियों की बली केवल एक स्त्री की बली नहीं है, बल्कि उस विश्वास की बली है, जो सदियों से हमारे समाज में विवाह जैसी पवित्र व्यवस्था को लेकर जीवित था।

आज कितनी ही बेटियाँ अपने सपनों, अपनी इच्छाओं और अपनी पहचान को विवाह के नाम पर खो देती हैं। बचपन से जिन्हें सिखाया जाता है कि 'एक दिन यह घर छोड़कर जाना है', वही बेटियाँ जब अपने नए घर में जाती हैं, तो वहाँ उन्हें प्रेम से अधिक अपेक्षाएँ मिलती हैं। उनसे त्याग माँगा जाता है, सहनशीलता माँगी जाती है, चुप्पी माँगी जाती है।

धीरे-धीरे उनकी मुस्कान कम होने लगती है, उनकी आवाज़ दबने लगती है, और एक दिन वे केवल एक जिम्मेदारी बनकर रह जाती हैं।

सबसे पीड़ादायक बात यह है कि समाज आज भी बेटी से ही समझौते की उम्मीद करता है। यदि विवाह में समस्या हो, तो सबसे पहले यही कहा जाता है–'थोड़ा और सह लो', 'समय के साथ सब ठीक हो जाएगा', 'घर बसाना आसान नहीं होता।'

कोई यह नहीं पूछता कि आखिर हर बार सहने की जिम्मेदारी केवल बेटी की ही क्यों होती है? क्यों हर बार उसकी भावनाओं, उसके आत्मसम्मान और उसके सपनों की बलि दी जाती है?

आज अनेक बेटियाँ मानसिक प्रताड़ना, अपमान और अकेलेपन से जूझ रही हैं। वे बाहर से मुस्कुराती दिखती हैं, पर भीतर से टूट चुकी होती हैं। कई बार वे अपने ही घर में पराई बना दी जाती हैं। उनके आँसू तक 'ड्रामा' कहकर अनदेखे कर दिए जाते हैं।

और सबसे दुखद यह है कि जब एक बेटी टूटती है, तो केवल उसका जीवन नहीं टूटता—उसके माता-पिता का विश्वास भी टूट जाता है। वह पिता, जिसने अपनी बेटी का हाथ किसी और के हाथ में यह सोचकर सौंपा था कि अब उसकी बेटी सुरक्षित रहेगी, भीतर ही भीतर अपराधबोध से भर जाता है। वह माँ, जिसने अपनी बेटी को संस्कार देकर विदा किया था, हर रात यह सोचकर रोती है कि शायद उसने अपनी बच्ची को गलत जगह भेज दिया।

आज आवश्यकता केवल बेटियों को मजबूत बनाने की नहीं है, बल्कि बेटों को संवेदनशील बनाने की है। आवश्यकता केवल बेटियों को सहनशीलता सिखाने की नहीं, बल्कि समाज को सम्मान और समानता का अर्थ समझाने की है।

विवाह तभी पवित्र रहेगा, जब उसमें दोनों का सम्मान बराबर होगा। जहाँ केवल एक पक्ष त्याग करता है और दूसरा अधिकार जताता है, वहाँ रिश्ता नहीं, केवल बंधन बचता है।

हर बेटी कोई बोझ नहीं होती, कोई वस्तु नहीं होती, जिसे एक घर से दूसरे घर भेज दिया जाए। वह भावनाओं से भरी एक जीवित आत्मा होती है। उसके भी सपने होते हैं, इच्छाएँ होती हैं, और सबसे बढ़कर–उसे भी प्रेम और सम्मान पाने का अधिकार होता है।

जिस दिन समाज यह समझ जाएगा कि बेटी की मुस्कान किसी भी परम्परा से अधिक महत्वपूर्ण है, उसी दिन विवाह संस्था फिर से विश्वास का प्रतीक बन सकेगी।

क्योंकि सच यही है–

जब एक बेटी की आत्मा रोज़-रोज़ मरती है, तब केवल एक स्त्री नहीं हारतीज्हार उस विश्वास की होती है, जिस पर पूरा समाज खड़ा था।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्दा मतलब मछली के पेट में अंगूठी !

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

नकली का जमाना है साहब। चमक नहीं हो तो सोना भी सोना नहीं माना जाए। नकली में चमक ज्यादा होती है। चमक के कारण ही लोग अब सोना भी नकली पसंद कर रहे हैं। जब सबके पास नकली हो तो नकली ही सुपाच्य है। कहते हैं असली पचता नहीं है किसीको। दूध, घी, अंडा, मिठाई, दवाई, दोस्ती, रिश्ते, देशभक्ति, साधु संत, वोटर - लीडर सब नकली चल रहे हैं, और लोकप्रिय चल रहे हैं। असली वाला जमाना अलग था। जब असली आंदोलन, असली देशभक्त और असली क्रांतिकारियों से हार कर अंग्रेज भाग गए थे। अब वो असली वाले राजा-वजीर और प्यादे नहीं रहे, न पुरानी वाली शतरंज की बिसात। इसका कारण यह कि असली पर एक्सपायरी डेट होती है, नकली के लिए कोई समय सीमा नहीं, जब तक चलती रहे चलाते जाओ। असली फूल मुरझाते हैं, नकली माला दशकों तक फोटो पर लटकी श्रद्धा के गीत गाती रहती है। किन्तु मुद्दों के साथ ऐसा नहीं है। असली मुद्दे भले ही इतिहास हो जाएं पर मौजूद रहते हैं।

चुनाव के शुरुआती दिनों में मांगने वालों को मुद्दे लपेट कर खड़ा होना पड़ता है। बाद में भले ही पानी-पुरी दिखाकर चुनाव जीत लें। असली मुद्दे असली और खानदानी होते हैं। उसमें ना कोई मिलावट हो सकती है ना कोई कमी बेसी। बल्कि यह कहना ठीक होगा की असली मुद्दे हमारी विरासत हैं। गरीबी, बेकारी और महंगाई, आज़ादी के समय से जो सीना तान के खड़े हुए तो आज भी डटे हुए हैं। सरकारें आ रही हैं सरकारें जा रही हैं लेकिन मुद्दे लालकिले कि तरह वहीं खड़े हैं। साल में एक बार आकर कोई न कोई तालियां बटोर ले जाता है मुद्दे वहीं पड़े रह जाते हैं। असली मुद्दे घाट पर लगी नाव हैं, वादाखोर आते हैं उसके सहारे नदी पार करते हैं और फिर बेसहारा छोड़ कर चले जाते हैं। मुद्दे न हुए शकुंतला हो गए। मछली के पेट से जब तक अंगूठी नहीं निकलेगी तब तक राजा दुष्यंत को याद नहीं आएगी। संसद भवन में कोई मछली ले कर तो पहुंचता नहीं है। तो फिर हवा में तैर रहे आज के मुद्दे क्या हैं?

आज के मुद्दे समोसा हैं, कचौरी है, कभी झालमुड़ी है तो कभी माछेरभात या मंगलसूत्र है। असली मुद्दों की और देखना नहीं,... 'मला छेडू नको'। तो आज के मुद्दे समझने से पहले आज की स्थिति को समझें। कहते हैं जीवन है तो संसार है। इसे और व्यावहारिक कर दें तो जान है तो देश है, देश है तो राजनीति है। और आप जानते ही हैं, जान जाने का ऐसा है कि कभी भी जा सकती है, पट्ट से। आम आदमी की सांसें इस पर निर्भर करती है कि गुंडेगण, बदमाशभाऊ किस मूड में है। यूँ मान के चलिए की ऊपर वाले की मर्जी के बगैर एक सांस भी आपको एक्स्ट्रा नहीं मिल सकती। 'ऊपर वाला' और 'नीचे वाला' दोनों मिलकर डबल इंजन वाले हो जाते हैं। उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। तो असली मुद्दा जान है। जो रॉन्ग साइड चलेगा उसकी पहले जा सकती है। सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। इस बात का ध्यान रखें कि अस्पताल मरने का सबसे महंगा लेकिन जरुरी स्थान है। वहाँ पैसा खत्म जिंदगी खत्म। तो व्यावहारिक मुद्दा पैसा हुआ। बड़े संत कह गए हैं, पैसा खुदा तो नहीं पर खुद की कसम खुदा से काम भी नहीं। तो जिसके पास पैसा है वही सही मायने में जिंदा है और जो जिंदा है उसी के लिए राजनीति है। बाकी लोग 'भाइयों और बहनों' सुनने के लिए अभिशप्त हैं।

कानून और न्याय

आवारा कुत्ते-2

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

आवारा कुत्तों को शेल्टर में ही रखा जाए

चाहे नसबंदी की गई हो या नहीं, समाज आवारा कुत्तों से मुक्त होना चाहिए। आपको शहर के किसी भी इलाके या बाहरी इलाके में एक भी आवारा कुत्ता घूमता हुआ नहीं दिखना चाहिए। यह पहला कदम है। हमने एक बहुत ही बेतुका और अनुचित नियम देखा है। अगर आप किसी आवारा कुत्ते को एक इलाके से उठाते हैं, तो आप उसकी नसबंदी करके उसे उसी जगह पर छोड़ देते हैं। यह बिल्कुल बेतुका है और इसका कोई मतलब नहीं है। वह आवारा कुत्ता उस इलाके में वापस क्यों आए और किस लिए?

यह पहला मामला नहीं है जब कुत्तों के काटने पर माननीय उच्चतम न्यायालय ने चिंता जताई हो। इससे पहले भी उच्चतम न्यायालय ने इस बात पर चिंता जताई है। पिछले साल अगस्त में न्यायमूर्ति पारदीवाल की एक खंडपीठ ने इस बात पर चिंता जताते हुए आवारा कुत्तों को शेल्टर होम भेजने का निर्णय लिया था। इस निर्णय में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अधिकारियों को सभी इलाकों से आवारा कुत्तों को डॉग शेल्टर में पहुंचाने का निर्देश दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने चेतावनी दी थी कि अगर कोई व्यक्ति या संगठन आवारा कुत्तों को उठाने से अधिकारियों को रोकता है, तो उसे कानूनी परिणाम भुगतने होंगे। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि अगर आवारा कुत्तों को उठाना जरूरी हुआ, तो अधिकारी बल प्रयोग भी कर सकते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय में कुत्तों के काटने और रेबीज के खतरे पर गंभीर चिंता व्यक्त की। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि आवारा कुत्तों को शेल्टर में ही रखा जाना चाहिए। उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय ने आवारा कुत्तों द्वारा बच्चों पर हमला करने से संबंधित एक समाचार रिपोर्ट पर स्वतः संज्ञान लेते हुए ये निर्देश जारी किए। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश में कहा कि शिशुओं और बच्चों को किसी भी कीमत पर रेबीज का शिकार नहीं होना चाहिए। इस कार्रवाई से उनमें यह विश्वास पैदा होना चाहिए कि वे आवारा कुत्तों के भय के बिना स्वतंत्र रूप से घूम सकते हैं। इसमें किसी भी तरह की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। सुनवाई के दरमियान, न्यायमूर्ति पारदीवाला ने नसबंदी किए गए कुत्ते को उसी इलाके में वापस छोड़ने के औचित्य पर सवाल भी उठाया था, जहां से उसे उठाया गया था। उन्होंने पूछा था कि चाहे नसबंदी की गई हो या नहीं, समाज आवारा कुत्तों से मुक्त होना चाहिए। आपको शहर के किसी भी इलाके या बाहरी इलाके में एक भी आवारा कुत्ता घूमता हुआ नहीं दिखना चाहिए। यह पहला कदम है। हमने एक बहुत ही बेतुका और अनुचित नियम देखा है। अगर आप किसी आवारा कुत्ते को एक इलाके से उठाते हैं, तो आप उसकी नसबंदी करके उसे उसी जगह पर छोड़ देते हैं। यह बिल्कुल बेतुका है और इसका कोई मतलब नहीं है। वह आवारा कुत्ता उस इलाके में वापस क्यों आए और किस लिए?

सुनवाई के दरमियान, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया तुषार मेहता ने न्यायालय से स्थिति को सुधारने के लिए सख्त हस्तक्षेप करने का आग्रह किया। पीठ ने अपने आदेश में कहा कि स्थिति बेहद गंभीर है। पीठ ने कहा कि कुत्तों के काटने से रेबीज होने की समस्या से निपटने के लिए तत्काल कदम उठाए जाने चाहिए। एसजी मेहता ने दलील दी कि नसबंदी से केवल कुत्तों की संख्या में वृद्धि रुकती है, लेकिन इससे कुत्तों की रेबीज फैलाने की क्षमता खत्म नहीं होती। मेहता ने कहा कि हमने यूट्यूब पर देखा है कि बच्चे मर रहे हैं और माता-पिता बेबस होकर रो रहे हैं। क्योंकि, डॉक्टर भी कहते हैं कि हमारे पास कोई इलाज नहीं है। न्यायमूर्ति पारदीवाला ने जवाब दिया कि इसीलिए पहला निर्देश यह होना चाहिए, सभी आवारा कुत्तों को जल्द से जल्द हर संभव तरीके से उठाना शुरू करें और उन्हें किसी दूर स्थान पर स्थानांतरित करें।

वरिष्ठ अधिवक्ता और न्याय मित्र गौरव अग्रवाल और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की सिफारिशों को सुनने के बाद, सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश पारित करते हुए जारी किए गए निर्देश दिए कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य, एमसीडी और नई दिल्ली नगर निगम तुरंत कुत्तों के लिए आश्रय स्थल बनाएं और 8 सप्ताह के भीतर पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य में बुनियादी ढांचे के निर्माण के बारे में रिपोर्ट करें। कुत्ता आश्रय स्थलों में आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए पर्याप्त कर्मचारी होंगे, और उन आवारा कुत्तों की देखभाल के लिए भी जिन्हें वहां हिरासत में लिया जाएगा और सार्वजनिक स्थानों पर नहीं छोड़ा जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई कुत्ता बाहर न ले जाया जाए, सीसीटीवी से निगरानी की जाएगी। चूंकि यह प्रगति पर है, इसलिए समय के साथ कुत्ता आश्रय स्थलों को बढ़ाना होगा। राज्य, एमसीडी, एनडीएमसी को अगले 6 से 8 सप्ताह में 5,000 कुत्तों के लिए शुरुआत करनी चाहिए। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, एमसीडी और एनडीएमसी को जल्द से जल्द सभी इलाकों से आवारा कुत्तों को उठाना शुरू करना चाहिए, विशेष रूप से कमजोर इलाकों और शहरों के साथ-साथ बाहरी इलाकों से भी। किसी भी कार्य में कोई समझौता नहीं होना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि कोई व्यक्ति या संस्था आवारा कुत्तों को पकड़ने या उन्हें पकड़ने में बाधा डालती है, तो हम ऐसे किसी भी प्रतिरोध के विरुद्ध कार्रवाई करेंगे। शिशुओं और छोटे बच्चों को किसी भी कीमत पर रेबीज का शिकार नहीं होना चाहिए। इस कार्रवाई से उनमें यह विश्वास पैदा होना चाहिए कि वे आवारा कुत्तों द्वारा काटे जाने के डर के बिना स्वतंत्र रूप से घूम सकते हैं। किसी भी प्रकार की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचनी चाहिए। साथ ही एमसीडी, एनडीएमसी और नोएडा व गुरुग्राम के संबंधित प्राधिकारी, सभी प्राधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे प्रतिदिन पकड़े गए और हिरासत में लिए गए आवारा कुत्तों का रिकॉर्ड रखें। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि एक भी आवारा कुत्ते को नहीं छोड़ा जाना चाहिए। ऐसा होना पर न्यायालय कड़ी कार्रवाई करेगा।

यह भी आदेश दिया कि एक सप्ताह के भीतर हेल्पलाइन बनाएं ताकि कुत्तों के काटने और रेबीज के सभी मामलों की सूचना दी जा सके। शिकायत प्राप्त होने के 4 घंटे के भीतर कुत्ते को उठाने के लिए कार्रवाई की जानी चाहिए और किसी भी व्यक्ति या संस्था द्वारा बाधा डालने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उक्त कुत्ते की नसबंदी की जाएगी और उसे छोड़ा नहीं जाएगा। इस संबंध में रिपोर्ट अगली सुनवाई में प्रस्तुत करने के आदेश भी दिए। इसके अलावा न्यायालय ने टीके की उपलब्धता एक प्रमुख चिंता व्यक्त की। न्यायालय ने कहा कि संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है कि वे उपलब्ध टीकों, टीकों के स्टॉक और इसे मांगने वाले व्यक्तियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराएं। हालांकि इन निर्देशों पर एक पूर्ण पीठ ने उक्त आदेश पर इस बात पर रोक लगाई कि उक्त निर्देशों का पालन करने के लिये दिल्ली म्युनिसिपल कारपोरेशन के पास पर्याप्त सुविधाएं नहीं है।

कायांतरण

चंद्रशेखर साकल्ले

कॉकरोच कथन- चोट पर मरहम लगाने की जरूरत

कॉकरोच से कई लोगों को फ्रेंज काफ्का की कालजयी कहानी 'मेटामार्फासिस' (कायांतरण) की याद आई। कहानी में एक युवा ग्रेगोर समसा एक सुबह जब उठा तो उसने पाया कि वह एक कॉकरोच में बदल गया है। उसका मनुष्य से कीड़े में कायांतरण हो चुका है। यहाँ से उसका असहनीय यंत्रणा भरा जीवन शुरू होता है।कॉकरोच में कायांतरित होना दरअसल मनुष्य का अपनी गरिमा और अस्तित्व का सबसे निचले स्तर पर पहुँचना है। मनुष्य यदि एक कीड़े में बदल जाए तो वह किसी काम का नहीं रहता। वह अस्तित्व शून्य हो जाता है। वह इधर-उधर रेंगकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश करता है, पर उसकी यह कोशिश लोगों के मन में वितृष्णा पैदा करती है और लोग उसे मारने के लिए चप्पल उठाते हैं या झाड़ू से बाहर बुहार देते हैं। जज साहब ने अनजाने में ही बेरोजगार युवाओं के लिए ऐसा प्रतीक चुन लिया जो युवाओं को बेहद नागवार गुजरा। उन्हें लगा क्या वे समाज के सबसे उपेक्षित और अनुपयोगी प्राणी हैं।

ए क जज साहब ने बेरोजगार युवाओं को कॉकरोच कह दिया। यही नहीं उन्होंने उन कामों को भी बेरोजगार युवाओं के खाते में डाल दिया और सिस्टम पर हमला करने वाला बता दिया जो आर टी आई कार्यकर्ता और सोशल मीडिया एक्टिविस्ट चेतना जगाने और जन जागृति के लिए करते हैं।बाद में जज साहब ने स्पष्टीकरण दिया कि उनकी बात को मीडिया ने ग़लत तरीके से प्रस्तुत किया। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और 'कॉकरोच 'शब्द हवा में फैले वायरस की तरह चारों तरफ बिखर गया था।जज साहब की टिप्पणी से आहत कुछ युवाओं ने सोशल मीडिया पर कॉकरोच जनता पार्टीका गठन कर लिया है। कॉकरोच जनता पार्टी की लोकप्रियता रॉकेट की रफ़्तार से ऊपर उठी है।ऐसा लगता है जैसे युवा इसका इंतज़ार ही कर रहे थे। संभवतः यह उस प्रतिरोध की अभिव्यक्ति हो जो युवाओं के मन में किसी निराशा से उपजी हो।कॉकरोच जनता पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता से सभी राजनीतिक दल अवाक् हैं।

कॉकरोच से कई लोगों को फ्रेंज काफ्का की कालजयी कहानी 'मेटामार्फासिस '(कायांतरण) की याद आई। कहानी में एक युवा ग्रेगोर समसा एक सुबह जब उठा तो उसने पाया कि वह एक कॉकरोच में बदल गया है। उसका मनुष्य से कीड़े में कायांतरण हो चुका है। यहाँ से उसका असहनीय यंत्रणा भरा जीवन शुरू होता है। कॉकरोच में कायांतरित होना दरअसल मनुष्य का अपनी गरिमा और अस्तित्व का सबसे निचले स्तर पर पहुँचना है। मनुष्य यदि एक कीड़े में बदल जाए तो वह किसी काम का नहीं रहता। वह अस्तित्व शून्य हो जाता है। वह इधर-उधर रेंगकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश करता है, पर उसकी यह कोशिश लोगों के मन में वितृष्णा पैदा करती है और लोग उसे मारने के लिए चप्पल उठाते हैं या झाड़ू से बाहर बुहार देते हैं। जज साहब ने अनजाने में ही बेरोजगार युवाओं के लिए ऐसा प्रतीक चुन लिया जो युवाओं को बेहद नागवार गुजरा। उन्हें लगा क्या वे समाज के सबसे उपेक्षित और अनुपयोगी प्राणी हैं।

दुनिया इस समय मंदी की चपेट में है। दुर्भाग्य से वैश्विक युद्धों ने मँहगाई के साथ नौकरियों को भी खतरे में डाल दिया है। एआई ने आई टी सेक्टर में खलबली मचा रखी है। हमारे सबसे ज़्यादा संख्या में युवा आई टी में हैं। कई कंपनियों में छँटनी शूरू हो गई है। युवाओं ने ई एम आई पर घर, गाड़ी खरीद ली है। बच्चों का मँहगे स्कूलों में दाखिला करा रखा है। ऐसे में नौकरी का जाना यानि पूरा जीवन अंधकारमय होना है।

और यदि पढ़ -लिख कर भी कोई बेरोजगार है तो उसका तनाव कितना ज़्यादा होगा। वह वैसे ही अपने को नाकारा समझता है, फिर यदि वह जीवन चलाने के लिए कुछ करता है और उसे कॉकरोच कह दिया जाए तो बुरा लगना स्वाभाविक है।

बहुत संभव है कि कॉकरोच जनता पार्टी एक अल्पावधि शिगूफा साबित हो सकती है। वैसे भी वह कोई स्थापित या रजिस्टर्ड राजनीतिक दल नहीं है। न कोई कार्यालय है,न संविधान हैं,न कोई चुनाव चिन्ह है। कुछ दिनों के बाद जोश ठंडा पड़ जाएगा और लोग भूल जाएंगे। कोई राजनीतिक दल भी एक असहज टिप्पणी की प्रतिक्रिया में बने सोशल मीडिया कैंपेन को अपनाने की ग़लती नहीं करेगा। लेकिन आग के नीचे दबे अंगारे सामने जलती लकड़ियों से ज़्यादा ख़तरनाक होते हैं। इसलिए बेहतर है कि युवा पीढ़ी की रोज़गार संबंधी समस्याओं को गंभीरता से लिया जाए। युवा पीढ़ी से संवाद स्थापित किया जाए।उनकी बातों को प्रतिपक्ष मान कर ध्वस्त न किया जाए। तर्क से हराना हमेशा काम नहीं देता। आक्रामक प्रचार राजनीतिक लाभ दे सकता है, पर समाज का विश्वास अर्जित नहीं कर सकता। एक स्वस्थ लोकतंत्र में युवा ही नहीं प्रत्येक नागरिक के मन में पक्का विश्वास रहता है कि शासन प्रशासन उसके कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है,उसे न्याय मिल रहा है और उसकी बात सभी माध्यम सही तरीके से सुन रहे हैं।

कॉकरोच कड़ी जान होते हैं।वे विषम परिस्थितियों में भी जीवित रह सकते हैं। पर उनकी नियति अंततः मारे जाने की होती है। ग्रेगोर समसा भी जल्दी नहीं मरा। यातना भरा जीवन जीता रहा। घरवालों के लिए परेशानी का सबब बना रहा और जब मरा तो परिवार को राहत मिली। लेकिन बेरोजगार युवा कॉकरोच नहीं है, उन्हें बेहतर जीवन का अवसर दीजिए। वे जिम्मेदार नागरिक बनेंगे।

राजनीति

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

तेलंगानाः कल, आज और कल

हैदराबाद सच्चे मोतियों का बड़ा बाजार है। यूं तो तेलंगाना तेलुगुभाषी है, लेकिन ठेठ दक्खनी का ठाठ वहां देखने को मिलता है। हैदराबादी तहजीब 'बाजार' जैसी फिल्मों में उभरती है। निजाम-दर-निजाम, राजा किशन परसाद, बद्री विशाल पित्ती और मख्दूम जैसी शख्सियतें, वारंगल फोर्ट, चारमीनार, रामप्पा मंदिर, ताज फलकनुमा होटल, सालारजंग म्यूजियम, साइबर सिटी यानि साइबराबाद और अनेक मध्य?युगीन व आधुनिक संरचनाएं इसके सौंदर्य और वैभव में चार चांद लगाती हैं। यहां के दस्तर-ख्वान की तो बात ही क्या? वह आस्वाद से आह्लाद और तृप्ति तक का मनभावन फलसफा है। तेलंगाना की धरती जरखेज है। तेलंगाना यूं ही नहीं लुभाता। यहां से जुड़े नामों की एक चमकीली फेहरिस्त है। हँसते हुये नूरानी चेहरों, तालीम, चिकित्सा, क्रीड़ा और मनोरंजन का मरकज है हैदराबाद। सीके नायडू, नायडू, गुलाम अहमद, अब्बास अली बेग, आबिद अली, शिवलाल यादव, अरशद अयूब, वी. राजू, नोएल डेविड, पीवी सिंधु, साइना नेहवाल, फुलेला गोपीचंद, निखत जरीन, एशा सिंह, गगन नारंग, मोहम्मद अजहरुद्दीन, वीवीएस लक्ष्मण, मिताली राज, मो. सिराज, तिलक वर्मा, सानिया मिर्जा आदि का ताल्लुक यहां से है। विवेक ओबेराय, तब्बू, सुष्मिता सेन, दीया मिर्जा, अजीत, अमजद खान जैसे सितारे यहां जनमें या जुड़े रहे। तेलुगु सिनेमा यानि टालीवुड की वैश्विक सिनेमा में अलग प्रतिष्ठा है। अल्लू अर्जुन यहां के चहेते सितारा हैं; पुष्पा 2 के लिये प्रशंसित स्टार। तेलुगु फिल्मों के लिये सिनेमाघरों में भीड़ उमड़ती है। रामोजी फिल्म सिटी सिने उद्योग का बड़ा केन्द्र है और आमोद स्थल भी। यहां की 'लोगां की बातां' मार्का जुबान का जवाब नहीं वह लुभाती है और बरबस दिल में उतर जाती है। हैदराबाद नमस्कारम् करता है और आदाब और सलाम भी।

2 का अंक तेलंगाना का शुभांक है। शुभ इस नाते कि आज से बारह साल पहले दो जून को वर्तमान तेलंगाना अस्तित्व में आया था। यूं तो तेलंगाना पहले भी था, अलबत्ता उसके पृथक प्रांत के तौर पर मानचित्र में उभरने के पीछे रक्त और स्वेद की लंबी लोमहर्षक गाथा छिपी है। तेलंगाना का इतिहास प्राचीन है, मगर वर्तमान स्वरुप अर्वाचीन। यहां की धरती उर्वरा है और रत्नगर्भा भी। उसने कोहेनूर समेत नायाब हीरों की नेमते दी हैं। कोल और लौह अयस्क सौंपे हैं और खूब गुल खिलाये हैं। निजाम और अन्य राजवंशों की शानोशौकत अब इतिहास के पन्नों की कथावस्तु है। वह स्थापत्य में प्रतिबिंबित है। हैदराबाद सच्चे मोतियों का बड़ा बाजार है। यूं तो तेलंगाना तेलुगुभाषी है, लेकिन ठेठ दक्खनी का ठाठ वहां देखने को मिलता है। हैदराबादी तहजीब 'बाजार' जैसी फिल्मों में उभरती है। निजाम-दर-निजाम, राजा किशन परसाद, बद्री विशाल पित्ती और मख्दूम जैसी शख्सियतें, वारंगल फोर्ट, चारमीनार, रामप्पा मंदिर, ताज फलकनुमा होटल, सालारजंग म्यूजियम, साइबर सिटी यानि साइबराबाद और अनेक मध्ययुगीन व आधुनिक संरचनाएं इसके सौंदर्य और वैभव में चार चांद लगाती हैं। यहां के दस्तर-ख्वान की तो बात ही क्या? वह आस्वाद से आह्लाद और तृप्ति तक का मनभावन फलसफा है। तेलंगाना की धरती जरखेज है। तेलंगाना यूं ही नहीं लुभाता। यहां से जुड़े नामों की एक चमकीली फेहरिस्त है। हँसते हुये नूरानी चेहरों, तालीम, चिकित्सा, क्रीड़ा और मनोरंजन का मरकज है हैदराबाद। सीके नायडू, नायडू, गुलाम अहमद, अब्बास अली बेग, आबिद अली, शिवलाल यादव, अरशद अयूब, वी. राजू, नोएल डेविड, पीवी सिंधु, साइना नेहवाल, फुलेला गोपीचंद,

तेलंगाना का इतिहास आरोह-अवरोह और घुमावों से भरा है। निजाम की कंजूसी के किस्से हैं और उदारता के प्रसंग भी। आचार्य विनोबा के भूदान यज्ञ से चर्चा और सुर्खियों में आया पोचमपल्ली इसी तेलंगाना में है। पारंपरिक पोचमपल्ली इकत साड़ियों और हथकरघा बुनाई के लिये वह जग विख्यात है। यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वराजयन के डेक्कन के इस महत्वपूर्ण और जरखेज सूबे के बारे में ज्यादा नहीं जानता। उसे रजाकारों और किसान आंदोलन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं। सन 1946 से 1951 के दरम्यान पुचलपल्ली सुंदरैया के नेतृत्व में सामंतों और कुलको के विरुद्ध विद्रोह का भारत के कृषक आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान है। आज कितनों की स्मृति में प्रो. कोटपल्ली जयशंकर और मल्लू स्वराजयम जीवित हैं? त्याग-बलिदान, सेवा और संघर्ष अभिलेखन मांगते हैं। तेलंगाना के अस्तित्व में आने की लोमहर्षक गाथा भी क्रमवार और प्रामाणिक डाक्यूमेंटेशन की मोहताज है।

तेलंगाना ने मुल्क की सियासत को नायाब सितारे दिये हैं। इनमें अग्रणी नाम है पामूलपर्ती वेंकट नरसिंहराव का है। वह विषम काल में भारत में प्रधानमंत्री रहे और बहुभाषिकता, विद्धता और आर्थिक सुधारों के लिये जाने गये। बीआरएस के के. चंद्रशेखर राव के दस वर्षीय शासन के बाद अनुमुला रेवंत रेड्डी तेलंगाना के द्वितीय मुख्यमंत्री हैं। राजनीति में वह पेशकदेमी और प्रत्युत्पन्नमति के लिये जाने जाते हैं। सात दिसंबर, सन 2023 को मुख्यमंत्री बने 56 वर्षीय रेवंत मल्काजगिरि से सांसद भी रह चुके हैं। वह कोडंगल से अनेकशः निर्वाचित होकर असेंबली में पहुंचे हैं। उन्होंने पहलेपहल सन 2007 में स्थानीय निकाय का चुनाव लड़ा था और सीढ़ी-दर-सीढ़ी इस प्रतिष्ठा पद तक पहुंचे। जून 2021 में प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और अनहोनी को होनी में बदल दिया। सीएम पद की शपथ लेने के दस दिनों के भीतर उन्होंने दो गारंटियां लागू कर अपना वचन निभाया। ये गारटियां थीं महिलाओं के लिए निःशुल्क बस सेवा और आरोग्यश्री स्कीम का दस लाख तक विस्तार। उनकी प्रजापालन योजना में एक करोड़ से अधिक अर्जियां आईं। तदंतर जुलाई में उन्होंने किसानों की कर्ज माफी के लिये रू. 31,000 करोड़ का फंड रिलीज किया। इससे करीब 40 लाख किसान लाभान्वित हुये। दो साल पहले स्थापना का दशक समारोह मनाने के बाद रेवंत दिल्ली गये और नितिन गडकरी, पीयूष गोयल, अमित शाह और जेपी नड्डा से मिले ताकि तेलंगाना के विकास को गति मिले। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी मिले और श्रवणापल्ली कोयला खदान सिंगारेनी कंपनी को देने की प्रार्थना की। प्रगति के रथ के पहियों को गति के प्रयोजन से वह अमेरिका के दौरे पर भी गये और एक हद तक निवेश लाने में सफल रहे। रेवंत रेड्डी दक्खिन भारत में कांग्रेस के पुरुषार्थी नायक माने जाते हैं। वह राहुल और सोनिया के लाड़ले नेता हैं। कांग्रेस को जहां अपने इस योद्धा से अनेक उम्मीदें हैं, वहीं तेलंगाना की जनता उनसे प्रदेश के सर्वांगीण विकास की अपेक्षा रखती है। हर कोई जानता है कि आज का समवेत उपक्रम तेलंगाना के बेहतर कल का हेतु बनेगा।

भीषण गर्मी : भारत के शहरों के सामने बढ़ती चुनौती

जलवायु संकट

संध्या अग्रवाल
लेखक साहित्यकार हैं।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में गर्मी का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। खासकर शहरी क्षेत्रों में तापमान सामान्य से कई डिग्री अधिक दर्ज किया जा रहा है, जिससे आम जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। यह केवल मौसम का बदलाव नहीं बल्कि जलवायु परिवर्तन का स्पष्ट संकेत माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले वर्षों में स्थिति और गंभीर हो सकती है।

भीषण गर्मी का सबसे ज्यादा असर गरीब और मजदूर वर्ग पर पड़ता है, जो दिनभर खुले आसमान के नीचे काम करने को मजबूर होते हैं। सड़क निर्माण, रिक्शा चलाने वाले, रेहड़ी-पटरी विक्रेता और दिहाड़ी मजदूर इस गर्मी से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। कई शहरों में लू लगने के मामलों में भी वृद्धि दर्ज की जा रही है, जो स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है। इसके अलावा, शहरी इलाकों में बढ़ती कांक्रीट की संरचनाएँ और हरियाली की कमी भी तापमान बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसे 'अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट' कहा जाता है, जिसके तहत शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक हो जाता है। पेड़ों की कटाई और अनियंत्रित निर्माण कार्य इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि अत्यधिक गर्मी से डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक, सिरदर्द और दिल से जुड़ी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। अस्पतालों में गर्मी से संबंधित मरीजों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। बच्चों और बुजुर्गों को इस मौसम में विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है, क्योंकि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अपेक्षाकृत कमजोर होती है।

सरकारी स्तर पर कई शहरों में हीट एक्शन प्लान लागू किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य गर्मी से बचाव और आपातकालीन स्थिति में राहत प्रदान करना है। इनमें पानी की उपलब्धता बढ़ाना, कूलिंग सेंटर बनाना और जागरूकता अभियान चलाना शामिल है। हालांकि विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल योजनाएँ बनाना पर्याप्त नहीं है, उनका सही क्रियान्वयन भी उतना ही जरूरी है।

स्कूलों और कार्यस्थलों में भी गर्मी के प्रभाव को देखते हुए समय में बदलाव और विशेष सावधानियाँ अपनाई जा रही हैं। कुछ राज्यों में दोपहर के समय बाहर निकलने पर प्रतिबंध या सलाह जारी की जाती है। यह कदम लोगों को सीधे धूप और लू से बचाने के लिए उठाए जाते हैं, ताकि स्वास्थ्य जोखिम को कम किया जा सके।

पर्यावरणविदों का कहना है कि इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान केवल वृक्षारोपण और हरित क्षेत्र बढ़ाने से ही संभव है। शहरों में ग्रीन कवर बढ़ाने, जल स्रोतों को संरक्षित करने और सतत विकास की नीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। यदि अभी से प्रयास शुरू नहीं किए गए तो आने वाले समय में स्थिति और अधिक विकराल हो सकती है।

इसके साथ ही आम नागरिकों की भूमिका भी बेहद महत्वपूर्ण है। पानी की बचत करना, अनावश्यक बिजली खपत कम करना और पर्यावरण के प्रति जागरूक रहना व्यक्तिगत स्तर पर किए जाने वाले छोटे लेकिन प्रभावी कदम हैं। सामूहिक प्रयासों से ही बड़े बदलाव संभव हैं।

जलवायु परिवर्तन अब केवल एक वैज्ञानिक विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह दैनिक जीवन की वास्तविकता बन चुका है। इसका प्रभाव कृषि, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और शहरी जीवन सभी पर पड़ रहा है। इसलिए इसे गंभीरता से लेना और तत्काल कदम उठाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अंततः कहा जा सकता है कि भीषण गर्मी केवल मौसम की समस्या नहीं, बल्कि एक चेतावनी है जो हमें पर्यावरण संतुलन की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम अभी सचेत नहीं हुए तो भविष्य में इसके परिणाम और अधिक कठिन हो सकते हैं।

10917 किसानों ने बेचा 6 लाख 75 हजार क्विंटल गेहूं

स्लॉट बुक कराने के बाद भी 1104 किसान गेहूं बेचने से रह गये वंचित

एस. द्विवेदी, बैतूल

बैतूल। 28 मई को समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी खत्म हो चुकी है। जिले में इस साल 40 हजार मैट्रिक टन गेहूं खरीदी का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। जिसके एवज में समर्थन मूल्य में कुल 6 लाख 75 हजार 490 क्विंटल गेहूं की खरीदी की गई है, जो तय लक्ष्य से अधिक है। वैसे जिले में गेहूं बेचने के लिए 18969 किसानों ने पंजीयन कराया था, जबकि 12021 किसानों ने स्लॉट बुक कराये थे। इनमें से तय तिथि तक जिले के 10917 किसान ही गेहूं बेच पाये। तिथि गुजरने के कारण स्लॉट बुक कराने वाले करीब 1104 किसान गेहूं बेचने से वंचित रह गये। किसानों का कहना है कि जैसे-तैसे पंजीयन तो करा लिया, लेकिन स्लॉट बुकिंग की बारी आई तो सरकारी सर्वर हांफ गया। जिसकी वजह से अधिकांश किसान स्लॉट बुक नहीं करा पाये। जिन किसानों ने स्लॉट बुक कराया, वह भी अंतिम तिथि तक उपज नहीं बेच सके। नतीजा यह है कि जो गेहूं सरकारी केन्द्रों पर बोनस मिलाकर 2625 रूपये प्रति क्विंटल बिकना था, अब खुले मंडी में कम दाम पर अपना अनाज बेचना पड़ेगा, जहां किसानों को प्रति क्विंटल 400 रूपये का घाटा उठाना पडेगा।

केवल खरीदी की तिथि बढ़ी, स्लॉट नहीं हुए बुक- समर्थन मूल्य पर गेहूं बेचने के लिए मुख्यमंत्री ने तिथि बढ़ाकर 28 मई करने की घोषणा की थी। लेकिन इसका फायदा सिर्फ उन्हीं किसानों को मिला, जिनके स्लॉट बुक हो चुके थे। जिन किसानों के स्लॉट बुक नहीं हुए है, वह किसान समर्थन मूल्य पर गेहूं बेचने से वंचित रह गये। किसानों का कहना है कि सरकार डिजिटल इंडिया का ढिंढोरा पीट रही है, लेकिन हकीकत यह है कि सर्वर और लचर सिस्टम की वजह से पंजीकृत किसानों में से 8052 किसान गेहूं नहीं बेच पाये। पहले छोटे किसानों से गेहूं की खरीदी हुई। फिर बड़े किसानों का अनाज खरीदा। इस बीच गेहूं बेचने के लिए किसान बार-बार स्लॉट बुक कराने के लिए चक्कर काटते रहे। किन्तु सर्वर की समस्या बनी रही। जिसकी वजह से हजारों किसान गेहूं बेचने से वंचित रह गये।

गेहूं खरीदने बनाये थे 64 खरीदी केन्द्र- जिले में गेहूं उपार्जन के लिए 64 केन्द्र बनाये गए थे। इनमें से 45 गोदाम स्तरीय और 19 समिति स्तरीय उपार्जन केन्द्र शामिल है। इन केन्द्रों पर गेहूं बेचने के लिए 12021 किसानों ने स्लॉट बुक किया था। जबकि अंतिम तिथि तक 10917 किसान ही गेहूं बेच पाये। जानकार बताते है कि समर्थन मूल्य पर गेहूं बेचने के लिए स्लॉट बुकिंग की अंतिम तिथि पहले 9 मई थी, उसे बढ़ाकर 23 मई किया गया था। लेकिन सर्वर के कारण स्लॉट बुक करने में किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ा। 13 मई के बाद किसान जब स्लॉट बुक करने पहुंचे तो गोदाम फुल का मैसेज सामने आने लगा। इसके कारण स्लॉट बुक नहीं हो सका और किसानों को एमएसपी में गेहूं बेचने से वंचित होना पड़ा।

किसानों को 170 करोड़ रूपये का भुगतान- जिले में गेहूं खरीदी के साथ-साथ किसानों को भुगतान की प्रक्रिया भी जारी रही। बताया जा रहा है कि 10917 किसानों से 6 लाख 75 हजार 490 क्विंटल गेहूं खरीदा गया है, जिसका कुल भुगतान करीब 177 करोड़ 31 लाख 61 हजार 250 रूपये होता है, जिसमें से अब तक 170 करोड़ रूपये का भुगतान किया जा चुका है। शेष किसानों के भुगतान की प्रक्रिया चल रही है। इन्हें भी जल्द भुगतान कर दिया जायेगा। इधर जिन समिति मे गेहूं की खरीदी हुई है, वहां से गेहूं के परिवहन की प्रक्रिया भी लगभग पूरी कर ली गई है। अंतिम दिनों में जो खरीदी हुई है, केवल 600 क्विंटल गेहूं का ही परिवहन होना शेष बचा है।

खुले मंडी में गेहूं के 2200 से 2500 रूपये दाम- स्लॉट बुक नहीं होने से पंजीयन करवाने वाले 8052 किसान गेहूं बेचने से वंचित रह गये। ऐसे किसानों के लिए मंडी में गेहूं बेचना ही विकल्प रह गया है। मंडी में गेहूं के दाम 2200 रूपये प्रति क्विंटल से 2500 रूपये प्रति क्विंटल तक है। गेहूं के दाम में तेजी नहीं आई तो किसानों को कम दामों पर गेहूं मंडी में ही बेचना पड़ेगा। जिससे किसानों को प्रति क्विंटल 400 रूपये का नुकसान उठाना पड़ेगा, क्योंकि उच्च क्वालिटी का गेहूं मंडी में 2500 रूपये के आसपास बिक रहा है। ऐसे में किसानों के सामने संकट खड़ा हो गया है।

डेढ़ माह की बच्ची को लावारिस बताकर थाने पहुंची मां

बोली- बैतूल बस स्टैंड पर महिला गोद में देकर चली गई, जांच में निकली खुद की बेटी

बैतूल। 26 वर्षीय एक महिला अपनी गोद में डेढ़ माह की बच्ची को लेकर थाने पहुंची और दावा किया कि बस स्टैंड पर एक अज्ञात महिला बच्ची उसकी गोद में देकर यह कहकर चली गई कि वह अभी लौटकर आएगी, लेकिन वापस नहीं आई। पहली नजर में मामला लावारिस बच्ची का प्रतीत हुआ, लेकिन महिला के बयान और व्यवहार ने पुलिस को संदेह में डाल दिया। इसके बाद थाना प्रभारी देवकरण डहरिया ने महिला को थाने में बैठाकर मामले की जांच शुरू कराई। पुलिस ने बच्ची को बाल कल्याण समिति के माध्यम से शिशु गृह मात्रछाया भेज दिया। वहीं सीडब्ल्यूसी अध्यक्ष अभिषेक जैन को भी महिला की कहानी संदिग्ध लगी। उन्होंने महिला को बैतूल में ही रोककर रखने के निर्देश दिए। जांच के दौरान पुलिस महिला को बस स्टैंड लेकर पहुंची। वहां लगे सीसीटीवी कैमरों की जानकारी मिलते ही महिला घबराई हुई नजर आई। इसके बाद पुलिस ने उसके मोबाइल से पति और परिजनों से संपर्क कर उन्हें थाने बुलाया। इसी बीच महिला को वन स्टॉप सेंटर भेजा गया, जहां उसकी तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गई। बाद में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। कुछ देर बाद महिला का पति और भाई थाने पहुंचे। उन्होंने पुलिस को बताया कि महिला अर्जुन नगर में अपने पति के साथ रहती है और शनिवार को गांव में शादी समारोह में जाने की बात कहकर घर से निकली थी।

प्रधानमंत्री मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के 134वें संस्करण को सभी बूथों पर सुना

मन की बात कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, विधायक नीना वर्मा शामिल हुए

धार। भारतीय जनता पार्टी जिला धार के सभी जिला पदाधिकारी मंडल अध्यक्ष और भाजपा किसान मोर्चा द्वारा रविवार को जिले के सभी 919 बुथ केंद्रों समेत किसान मोर्चा के 100 स्थानों पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के लोकप्रिय मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 134वें संस्करण पर श्रवण किया। 'मन की बात'कार्यक्रम अंतर्गत केंद्रीय मंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती , भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष रविंद्र पाटीदार ने सरदारपुर विधानसभा ग्राम बांदेड़ी स्थित बूथ क्रमांक 264 पर भाजपा परिवारजनों, किसानों एवं स्थानीय नागरिकों के साथ श्रवण किया।

इसी क्रम में विधायक नीना वर्मा ने धार के कृषि विज्ञान केंद्र और भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ,किसान मोर्चा जिला उपाध्यक्ष ने ग्राम खरसोड़ा बूथ क्रमांक 06 पर 'मन की बात'कार्यक्रम को सुना।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में राष्ट्र निर्माण, किसान कल्याण, जनभागीदारी, नवाचार, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रेरणादायी विचार साझा किए। उनके संदेश विकसित भारत के निर्माण हेतु प्रत्येक नागरिक को सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस अवसर पर भाजपा जिला मंत्री कमल यादव भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष रविंद्र पाटीदार, मंडल अध्यक्ष विजय दीक्षित ,शुभम पाटीदार, भाजपा नेता रवि पाठक, जितेंद्र रघुवंशी, शुभम दीक्षित ,सन्नी होड़ा, शांतिलाल शर्मा, मांगीलाल कुल्हारा ,गोपाल वैष्णव ,खेमराज लववंशी, इंदर पटेल सहित बड़ी संख्या में किसान एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय विधायक कार्यालय में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर मंडल प्रभारी अर्चना साहू का प्रवास

सोहागपुर। क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह के सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय कार्यालय में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर भारतीय जनता पार्टी की जिला उपाध्यक्ष एवं सोहागपुर मंडल प्रभारी अर्चना साहू का प्रवास संम्पन्न हुआ। इस बैठक में शक्ति केंद्र की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने आगामी राष्ट्रीय एवं संगठनात्मक कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विस्तृत सारगर्भित चर्चा की गई। वहीं पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से भेंट कर संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा की गई। इसके उपरांत आयोजित शक्ति केंद्र बैठक में कार्यकर्ताओं को आगामी कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष एवं मंडल प्रभारी अर्चना साहू, ब्लाक भाजपा अध्यक्ष अश्वनी सरोज, नगर पंचायत परिषद उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, अनिल गहरैया, भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष अभिनव पालीवाल, मंडल महामंत्री मिथिलेश ठाकुर नन्हू छाबड़िया, पार्षद रवि उईके, एल्डरमैन नितिन कहार, कार्यालय मंत्री डालचंद साहू, जीतू कहार सहित मंडल एवं शक्ति केंद्र के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। राष्ट्रीय भाजपा अध्यक्ष से प्राप्त निर्देशों के अनुसार 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत प्रत्येक बूथ पर वृक्षारोपण किया जाएगा। इसके साथ ही जनप्रतिनिधियों एवं मंडल कार्यकर्ताओं विशेष जनसंपर्क अभियान कार्यक्रम आयोजित करेंगे। जिसमें किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक करने हेतु प्राकृतिक खेती कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाएगा। वहीं 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर बूथ स्तर तक योग कार्यक्रम आयोजित होंगे। बैठक के अंत में भाजपा जिलाध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं मंडल प्रभारी अर्चना साहू ने कार्यकर्ताओं से संगठन की रीति-नीति एवं केंद्र तथा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने तथा बूथ स्तर पर सक्रियता बढ़ाने का आह्वान किया। वहीं आपने राष्ट्रीय भाजपा नेतृत्व के द्वारा निर्धारित सभी कार्यक्रमों को प्रदेश, जिला, मंडल, शक्ति केंद्र एवं बूथ स्तर तक प्रभावी ढंग से आयोजित करना संगठन की प्राथमिकता है। इसी अवसर पर बैठक में कार्यकर्ताओं एवं संगठन को अधिक मजबूत बनाने, आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए पूर्ण समर्पण एवं सक्रियता के साथ कार्य करने का संकल्प लिया गया।

ब्रह्माकुमारीज का नशा मुक्ति अभियान सभी के लिए प्रेरणादायक : खंडेलवाल

बैतूल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर रविवार को नशा मुक्ति जागरूकता रैली निकाली गई। रैली ब्रह्माकुमारी के इटारसी रोड स्थित सेवा केंद्र से गेंदा चौक, कारगिल चौक होते हुए अम्बेडकर चौक पर पहुंचकर समाप्त हुई। इस रैली के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष व बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, भारत सरकार के जनजातीय मामलों के केंद्रीय राज्यमंत्री और स्थानीय सांसद डीडी उइके, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे तथा मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। रैली के समापन अवसर पर अपने संबोधन में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने ब्रम्हकुमारीज के नशा मुक्ति अभियान की सराहना करते हुए इसे सभी के लिए प्रेरणादायक बताया और उपस्थित सभी लोगों से अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र को नशे की बुराइयों से मुक्त बनाने हेतु सक्रिय योगदान देने का संकल्प करने को कहा। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उइके ने ब्रह्माकुमारीज के नशा मुक्ति अभियान एवं नैतिक जागरण शिविर की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए इसके लिए ब्रह्माकुमारीज के सदस्यों को साधुवाद दिया और इसे समाज के लिए अनुकरणीय पहल बताया। उन्होंने कहा कि हम सभी को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए, ताकि पूरे समाज को नशे से दूर किया जा सके। समापन अवसर पर ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र बैतूल की प्रभारी बीके मंजू दीदी ने अपने संबोधन में तंबाकू एवं अन्य प्रकार के नशीले पदार्थ का सेवन करने से होने वाले दुष्प्रभाव बताते हुए कहा कि व्यक्ति और उसका परिवार नशे के कारण बर्बाद हो जाता है, जो कि पूरे समाज के लिए बहुत घातक हैं।

महाराणा प्रताप जयंती पर राजपूत समाज ने रैली निकाल कर भोजशाला में मां वाग्देवी का पूजन किया

धार। जिला राजपूत समाज के तत्वावधान में वीर शिरोमणि राष्ट्र नायक महाराणा प्रताप की 486 वी जयंती भव्य रूप में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत में मांडव रोड स्थित धर्मशाला से विशाल वाहन रैली के रूप में शौर्य यात्रा निकाली गई । रथ जिसमें महाराणा प्रताप का चित्र रखा हुआ था। डीजे पर राष्ट्रभक्ति, वीर रस के गीत बज रहे थे। दो पहिया व चार पहिया वाहनों का काफिला इस यात्रा में शामिल था। यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों निकली जहां कई सामाजिक संगठनों द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। यात्रा भोजशाला मां वाग्देवी मंदिर पहुंची यहां वाग्देवी का पूजन समाज के अध्यक्ष निर्भय सिंह पटेल, वरिष्ठ समाजसेवी समंदर सिंह पटेल,मोहन सिंह परिहार, धर्मेंद्र सिंह जावरा, रमेश सिंह सिसोदिया, मलखान सिंह मोरी,लाखन सिंह सिसोदिया, दिलीप सिंह पटेल, बद्री सिंह पटेल , विक्रम सिंह मंडलोई विजय सिंह राठौड़, नवीन सिंह चौहान, राजेंद्र सिंह चौहान, विजय सिंह चौहान,नितेश सिंह,घनश्याम सिंह निकम, जीवन सिंह पटेल, घनश्याम सिंह सोलंकी,संजय सिंह सोलंकी, भारत सिंह पटेल, रघुवीर सिंह चौहान, घनश्याम सिंह सिसोदिया,कुलदीप सिंह तंवर, भूपेंद्र सिंह राजावत, गजेंद्र सिंह चौहान मेहरबान सिंह पवार, अर्जुन सिंह पवार आदि के द्वारा पूजन आरती की गई। शौर्य यात्रा पुणे अपने निर्धारित मार्ग से होकर समाज के धर्मशाला पहुंची जहां मुख्य कार्यक्रम समाज के अध्यक्ष व वरिष्ठ समाज जनों द्वारा दीप प्रज्वलन कर मां दुर्गा एवं वीर शिरोमणि महाराणा के प्रताप के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई । समाज के सलाहकार विजय सिंह राठौड़ ने समाज द्वारा कराई की गई जमीन हेतु समाज के सरदारों से अधिक से अधिक दान देने की अपील की गई । समाज के नगर अध्यक्ष मोहन सिंह परिहार द्वारा इस कार्य में हो रही प्रगति की जानकारी समाज जनों को दी गई। जानकारी समाज के नगर सचिव नवीन सिंह चौहान द्वारा दी गई।

14 विभिन्न ट्रेड्स की 420 सीटों पर सत्र 26-27 के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

शासकीय एकलव्य आई.टी.आई. धार में ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

धार। शासकीय एकलव्य औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, धार में सत्र 2026-27 के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन एवं चॉइस फिलिंग की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। इच्छुक आवेदक स्वयं अथवा अपने नजदीकी आई.टी.आई. हेल्पडेस्क के माध्यम से एमपी ऑनलाइन पोर्टल mpiticounseling.co.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन दर्ज करा सकते हैं। संस्था के प्राचार्य ने बताया कि इस सत्र में संस्थान के 14 विभिन्न तकनीकी एवं व्यावसायिक ट्रेड्स में कुल 420 सीटों पर प्रवेश दिया जाना है। प्रवेश के इच्छुक उम्मीदवार अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार विकल्पों का चयन कर सकते हैं।

रोजगारोन्मुखी मुख्य ट्रेड्स और शैक्षणिक योग्यता- इस वर्ष मुख्य रूप से इलेक्ट्रिशियन, कोपा, डीजल मैकेनिक, स्टेनो (हिंदी), वेल्डर, फिटर, मोटर व्हीकल मैकेनिक के साथ-साथ वर्तमान समय की मांग को देखते हुए इलेक्ट्रिक वाहन मैकेनिक जैसे आधुनिक ट्रेड में भी प्रवेश का अवसर उपलब्ध है। इन ट्रेड्स के लिए न्यूनतम योग्यता पदानुसार 8वीं अथवा 10वीं उत्तीर्ण निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त, आई.टी.आई. करने वाले विद्यार्थियों के लिए कोर्स के साथ ही 12वीं समकक्ष सर्टिफिकेट प्राप्त करने की सुविधा भी शासन द्वारा प्रदान की जा रही है।

शत-प्रतिशत प्लेसमेंट सहायता और छात्रवृत्ति- संस्थान द्वारा विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 100 प्रतिशत प्लेसमेंट सहायता प्रदान की जाती है। उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को टाटा, महिंद्रा, मारुति सुजुकी, बजाज और हीरो जैसी देश की अग्रणी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में रोजगार के सीधे अवसर प्राप्त होंगे। शासन के नियमानुसार, अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों को 1000 रुपये प्रति माह छात्रवृत्ति दी जाएगी। साथ ही उनके लिए संस्थान परिसर में बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक सर्वसुविधायुक्त हॉस्टल एवं मेस की व्यवस्था उपलब्ध है। अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को भी राज्य शासन के नियमानुसार छात्रवृत्ति का लाभ पात्रतानुसार देय होगा।

यहाँ करें संपर्क- प्रवेश प्रक्रिया, चॉइस फिलिंग अथवा अन्य किसी भी तकनीकी मार्गदर्शन के लिए आवेदक सीधे एकलव्य आई.टी.आई., इंदौर नाका, धार स्थित कार्यालय में उपस्थित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विभागीय हेल्पलाइन नंबर 9009767675, 9009489827 एवं 9340069367 पर भी संपर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

शराब बंद करो या आंदोलन झेलो–कुड़याला से उठी चेतावनी

अवैध बिक्री पर रोक नहीं लगी तो उग्र आंदोलन की ग्रामीणों ने दी

टीकमगढ़/जतारा। बम्होरी कला थाना क्षेत्र के ग्राम कुड़याला में कथित अवैध शराब बिक्री के विरोध में शुक्रवार को ग्रामीणों का गुस्सा सड़क पर फूट पड़ा। लंबे समय से गांव में खुलेआम अवैध शराब की बिक्री होने और शिकायतों के बावजूद कार्रवाई नहीं होने से नाराज ग्रामीणों ने जतारा-पलेरा मुख्य मार्ग पर चक्काजाम कर दिया। प्रदर्शन के चलते मार्ग पर करीब डेढ़ घंटे तक यातायात पूरी तरह प्रभावित रहा और दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। ग्रामीणों का आरोप है कि गांव में लंबे समय से अवैध शराब का कारोबार संचालित हो रहा है, जिससे सामाजिक वातावरण दूषित हो रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि इस संबंध में कई बार पुलिस एवं संबंधित अधिकारियों को शिकायतें दी गईं, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। कार्रवाई के अभाव में लोगों में लगातार नाराजगी बढ़ती गई, जो शुक्रवार को सड़क पर प्रदर्शन के रूप में सामने आई। प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों ने कहा कि गांव में अवैध शराब की उपलब्धता के कारण युवाओं में नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है और इससे परिवारों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि अवैध शराब कारोबार पर प्रभावी अंकुश नहीं लगाया जा रहा है, जिससे कारोबारियों के हौसले बुलंद हैं।

चक्काजाम की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर उन्हें शांत कराने का प्रयास किया। ग्रामीणों ने पुलिस अधिकारियों के समक्ष अवैध शराब बिक्री पर तत्काल रोक लगाने, जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने तथा गांव में नियमित निगरानी बढ़ाने की मांग रखी। पुलिस अधिकारियों द्वारा मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिए जाने के बाद ग्रामीणों ने जाम समाप्त किया। इसके बाद यातायात व्यवस्था पुनः सुचारू हो सकी। ग्रामीणों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि गांव में अवैध शराब बिक्री पर शीघ्र प्रभावी रोक नहीं लगाई गई तो वे आने वाले दिनों में और बड़ा जनआंदोलन करने को बाध्य होंगे। ग्रामीणों का कहना है कि गांव के सामाजिक माहौल और युवा पीढ़ी के भविष्य को बचाने के लिए अवैध शराब कारोबार पर कठोर कार्रवाई अत्यंत आवश्यक है।

माइसेम सीमेंट फैक्ट्री में विश्व पर्यावरण का आयोजन

दमोह। हाइडेलबर्ग सीमेंट इंडिया लिमिटेड, नरसिंहगढ़ प्लांट, दमोह–यूनिट हेड के नेतृत्व एवं क्षेत्रीय अधिकारी मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सागर के मार्गदर्शन एवं सहयोग से विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का दस दिवसीय आयोजन किया जा रहा है। जिले की पथरिया तहसील अंतर्गत सूखा एवं जगथर गांवों में बड़े उत्साह एवं जनभागीदारी के साथ किया गया। यह कार्यक्रम एचआर एवं एडमिन हेड विकास कुमार एवं उनकी टीम की एक सराहनीय पहल रही। 28 मई 2026 को आयोजित इस जागरूकता कार्यक्रम में लगभग 200 ग्रामीणों, किसानों, युवाओं एवं बच्चों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 'क्लाइमेट एक्शन' एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण विभाग प्रमुख श्री अशोक तिवारी ने उपस्थित ग्रामीणों को 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट' की महत्ता के बारे में जानकारी दी तथा वृक्षारोपण, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण एवं हरित जीवनशैली अपनाकर स्थानीय तापमान में कमी लाने जैसे पर्यावरण अनुकूल उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

इंद्र के अहंकार को तोड़ने श्री कृष्ण की गोवर्धन लीला: पं धनंजय महाराज

दमोह। नगर के श्री मनसा पूरन नर्मदेश्वर महादेव शिवालय विवेकानंद कॉलोनी सिविल वार्ड 06दमोह में चल रही संगीतमय श्रीमदभागवत कथा के पांचवे दिवस पंडित धनंजय महाराज जी ने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है। जिसमें श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन मुख्य रूप से भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं (माखन चोरी, बाल लीलाएं) और गोवर्धन पूजा का वर्णन करते हुए इस दिन मुख्य प्रसंगों की लीलाओं का विस्तार से रसपान कराया जाता हैं। बाल लीलाएं: कान्हा द्वारा मैया यशोदा को अपनी बालहट से परेशान करना, माखन चुराना और गोपियों की मटकी फोड़ना, पूतना वधः कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी पूतना का श्रीकृष्ण द्वारा उद्धार किया जाना । गोवर्धन लीला- इंद्र का अहंकार और गोवर्धन पूजा की शुरुआत एक बार ब्रज में सभी लोग देवराज इंद्र की पूजा की तैयारी कर रहे थे। तब बाल कृष्ण ने नंद बाबा और अन्य ग्वालों से पूछा कि आप लोग यह पूजा क्यों और किसके लिए करते हैं? ग्वालों ने बताया कि इंद्रदेव वर्षा करते हैं, जिससे अन्न और चारा उत्पन्न होता है, इसलिए उन्हें प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किया जाता है।इस पर श्रीकृष्ण ने समझाया कि हमें गोवर्धन पर्वत (गिरिराज) की पूजा करनी चाहिए, क्योंकि वे हमें फल, कंद-मूल और हमारी गायों को चारा प्रदान करते हैं। ब्रजवासियों ने कृष्ण की बात मानकर इंद्र के बजाय गोवर्धन पर्वत की पूजा की। इस पर इंद्र ने क्रोध में आकर मूसलाधार वर्षा मेघों के राजा 'समवर्तक' को आज्ञा देकर शुरू करा दी कि ब्रज में पानी की प्रलय से बृजवासी नष्ट हो जाएं। तब श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों की रक्षा करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठिका (सबसे छोटी) उंगली पर उठा कर सभी की रक्षा की। तब इंद्र का अहंकार टूट गया। उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी। इसके बाद से ही कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा की परंपरा आरंभ हुई।

ट्रॉली पलटने से अब तक 6 श्रद्धालुओं की मौत

49 लोग सवार थे, 26 मेडिकल कॉलेज में एडमिट

उमरिया (नप्र)। उमरिया और अनूपपुर जिले की सीमा पर स्थित मिलनी गांव के पास शुक्रवार को एक ट्रैक्टर-ट्रॉली पलट गई थी। इस हादसे में मृतकों की संख्या बढ़कर 6 हो गई है। ट्रॉली में कुल 49 श्रद्धालु सवार थे, जो ग्राम पड़मनिया से पूजा-अर्चना के लिए ग्राम बिजौरा जा रहे थे। इसी दौरान ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई।

हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि दो अन्य ने पाली अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। गंभीर रूप से घायल 28 लोगों को शहडोल मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था, जहां उपचार के दौरान दो और लोगों ने दम तोड़ दिया।शनिवार को शहडोल मेडिकल कॉलेज में 26 घायलों का इलाज जारी है। वहीं, पाली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 5 घायलों का उपचार चल रहा है। हादसे में घायल हुए 13 लोगों को हालत में सुधार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

मुख्यमंत्री ने अनूपपुर जिले में हुई सड़क दुर्घटना पर किया शोक व्यक्त,4-4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने के दिए निर्देश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अनूपपुर जिले में पुष्पराजगढ़ के ग्राम बिजौरा में श्रद्धालुओं को लेकर मंदिर जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉली के पलटने से हुई सड़क दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुर्घटना में 6 लोगों के असामयिक निधन और कुछ लोगों के घायल होने का समाचार अत्यंत दुखद है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोकाकुल परिजन के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन की ओर से मृतकों के परिजन को 4-4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने के निर्देश दिए हैं। दुर्घटना में घायलों का उपचार जारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिवंगतों की आत्मा को शांति और घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने की बाबा महाकाल से प्रार्थना की है।

अपराधियों को सख्त संदेश, 24 घंटे में खुला हत्याकांड

टीकमगढ़। जिले में अपराधों के प्रति सख्त रुख अपनाते हुए देहात थाना पुलिस ने हत्या के एक सनसनीखेज मामले का महज 24 घंटे के भीतर खुलासा कर आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई को जिले में कानून-व्यवस्था बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। जानकारी के अनुसार 24 और 25 मई की दरम्यानी रात ग्राम बड़ागांव खुर्द में मोहन यादव (55) की अज्ञात व्यक्ति द्वारा मारपीट कर हत्या कर दी गई थी। घटना की सूचना मिलते ही देहात थाना पुलिस ने अपराध क्रमांक 218/2026 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई ने तत्काल विशेष टीम गठित कर घटना के शीघ्र खुलासे के निर्देश दिए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह कुशवाहा एवं एसडीओपी राहुल कटारे के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी देहात निरीक्षक चंद्रजीत यादव के नेतृत्व में पुलिस टीम ने जांच को गति दी। पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्यों, साइबर इनपुट, मुखबिर तंत्र और सतत पतारसी के आधार पर जांच को आगे बढ़ाया। लगातार प्रयासों के बाद पुलिस ने हत्या की गुत्थी सुलझाते हुए आरोपी राजकुमार उर्फ लल्लू सेन (23) निवासी बड़ागांव खुर्द को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ और साक्ष्यों के आधार पर आरोपी के खिलाफ आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की गई तथा उसे न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। पुलिस अधिकारियों के अनुसार मामले के शीघ्र खुलासे में टीमवर्क, तकनीकी जांच और सतर्कता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पूरे प्रकरण की लगातार निगरानी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा की जा रही थी, जिससे जांच को सही दिशा और गति मिली।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला कौशल समिति की उच्च स्तरीय बैठक

क्षेत्र के युवाओं के कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने वाली योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई?

धार। कलेक्टर राजीव रंजन मीना की अध्यक्षता में शुक्रवार को औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर के निर्यात भवन में जिला कौशल समिति की एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र के युवाओं के कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने वाली विभिन्न महत्वाकांक्षी सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा की गई। युवाओं को उद्योगों से जोड़ने और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया गया। बैठक के दौरान युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें स्थानीय उद्योगों की मांग के अनुरूप तैयार करने के लिए संचालित योजनाओं पर गहन चर्चा हुई।

बैठक में आईटीआई प्रवेश प्रक्रिया का सरलीकरण के संबंध में आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया को अधिक सुगम और व्यापक बनाने के निर्देश दिए गए, ताकि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों के अधिकतम छात्र तकनीकी शिक्षा से जुड़ सकें। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के तहत स्थानीय उद्योगों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित कर युवाओं को व्यावहारिक औद्योगिक अनुभव दिलाने की रणनीति पर बल दिया गया।

बैठक में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप योजना अंतर्गत आईटीआई उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को क्षेत्र के प्रतिष्ठित औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अधिक से अधिक अप्रेंटिसशिप के अवसर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए।

इसी के साथ ही मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना के तहत युवाओं के पंजीयन, उद्योगों में रिक्तियों के विरुद्ध उनकी जॉइनिंग और उन्हें मिलने वाले स्टाइपेंड की वर्तमान प्रगति की बिंदुवार समीक्षा की गई।

बैठक में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था धार द्वारा कौशल विकास और प्लेसमेंट के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की विशेष रूप से सराहना की गई। कलेक्टर ने संस्था की रीढ़ माने जाने वाले ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल और जूनियर अप्रेंटिस एडवाइजर की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि संस्था न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी प्रशिक्षण दे रही है, बल्कि इन्डस्ट्री कनेक्ट के माध्यम से उन्हें सीधे रोजगार और अप्रेंटिसशिप के अवसरों से जोड़कर सराहनीय कार्य कर रही है। कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों, उद्योग प्रतिनिधियों और आईटीआई समन्वयकों को आपसी समन्वय के साथ काम करने के कड़े निर्देश दिए।

धार जिले में नई फार्मा इकाई मैडइम्पैक्ट लाइफसाइंसेज का भव्य उद्घाटन मंत्री चैतन्य काश्यप के हाथों आज

औद्योगिक क्षेत्र उज्जैनी में आकार ले रही अत्याधुनिक एपीआई और स्टेरॉयड विनिर्माण इकाई

धार। धार जिले के औद्योगिक परिदृश्य में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। फार्मास्युटिकल क्षेत्र की प्रतिष्ठित मैडइम्पैक्ट लाइफसाइंसेज कंपनी द्वारा जिले के ग्राम-उज्जैनी स्थित एमपीआईडीसी इंडस्ट्रियल एरिया (प्लॉट नंबर 125-126) में एक अत्याधुनिक नई विनिर्माण इकाई स्थापित की गई है। इस भव्य औद्योगिक संयंत्र का उद्घाटन रविवार, 31 मई को शाम 4:30 बजे से आयोजित किया जाएगा।

इस भव्य उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के केबिनेट मंत्री चैतन्य काश्यप होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में धार क्षेत्र की लोकप्रिय विधायक नीना वर्मा एवं अशोक जैन विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

क्षेत्र में बढ़ेंगे रोजगार और निवेश के अवसर कंपनी के निदेशक द्वय संजय रमनलाल जैन एवं आशीष कैलाश चंद जैन ने बताया कि यह नई इकाई मुख्य रूप से एपीआई (एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट्स) और स्टेरॉयड के उच्च गुणवत्तायुक्त निर्माण पर केंद्रित होगी। विज्ञान और अनुसंधान पर आधारित इस अत्याधुनिक प्लांट के शुरू होने से न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार और औद्योगिक निवेश के नए अवसर भी सृजित होंगे।

कलेक्ट्रेट की नजूल शाखा में पदस्थ हेमराज झाडे हुए सेवानिवृत

34 साल के सेवा के बाद हुए रिटायर, 1 साल में नवीनीकरण के 1790 प्रकरण निपटाए

बैतूल। कलेक्ट्रेट की नजूल शाखा में सहायक ग्रेड 3 हेमराज झाडे 30 मई को अपनी 34 साल 7 महीने की सेवा पूरी कर रिटायर हो गए। उन्होंने इस सेवा काल के दौरान शाहपुर, भैसदेही और बैतूल में अपनी सेवाएं दी। वे अधिकांश समय कलेक्ट्रेट में ही पदस्थ रहे। उनकी कार्यशैली के कारण वे सभी के प्रिय रहे। उन्होंने कलेक्टोरेट में पदस्थ रहते सभी तरह की जिम्मेदारी पूरी निष्ठाश्चश्च के साथ निभाई।सेवा काल के आखिरी दौर में वे कलेक्टरेट की नजूल शाखा में पदस्थ रहे। इस दौरान उन्होंने पट्टा वितरण और नवीनीकरण के प्रकरणों में अच्छा कार्य किया और अधिकारी वर्ग से सराहना भी पाई। वर्ष 2025 और 26 में उन्होंने 1 हजार 790 प्रकरण नवीनीकरण के निपटाएं। इनसे 3 करोड़ 19 लख रुपए के राजस्व की वसूली की गई। इससे सरकारी खाते में राजस्व की सबसे ज्यादा आय हुई। यह एक बडी उपब्धि थी। कलेक्ट्रेट में सेवानिवृत्ति के विदाई कार्यक्रम के अवसर पर झाड़े ने कहा कि उन्होंने किसी भी काम को कभी बोझ नहीं समझा। हर काम को हंसी खुशी के साथ पूरा किया। लोगों को आपसे उम्मीद होती है, वे अपने काम के लिए आते हैं, उनकी बात कोई सुन लेता है, तो बिना काम के खुश हो जाते हैं। काम भले ही बाद में हो तो भी चल जाता है। उन्होंने अपने साथी कर्मचारियों को संदेश देते हुए कहा कि वे हर काम को आपसी सामंजस से पूरा करें। काम को कभी बोझ ना समझे, बल्कि उसे हंसी खुशी के साथ पूरा करें। इससे कोई परेशानी नहीं होगी।

जिला आयुष अधिकारी ने जनता से की योग से जुडने की अपील

बैतूल। मप्र आयुष विभाग द्वारा संचालित घर-घर योग -हर व्यक्ति निरोग अभियान के तहत जिले में आमजन को योग से जोडने के लिए नियमित ऑनलाइन योग प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि प्रतिदिन सुबह 8 बजे यूट्यूब के माध्यम से योग प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे लोग घर बैठे योगाभ्यास और विभिन्न योग क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि योग को जन-जन तक पहुंचाने और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया जा रहा है। जिले के नागरिक अपने निकटस्थ आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी, बैतूल तथा क्षेत्र के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों (आयुष) में पहुंचकर भी इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। डॉ. चौकीकर ने जिले की जनता से अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान से जुडने की अपील करते हुए कहा कि लोग घर से ही यूट्यूब के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर नियमित योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं और निरोग जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।

नगर पंचायत परिषद ने संपत्तिकर में एक हजार गुना तक वृद्धि की , वरिष्ट कांग्रेस पार्षद बेलवंशी ने कहा यह खुली लूट

सोहागपुर। नगर पंचायत परिषद की कार्यशैली पर निर्वाचन समय से ही विभिन्न आरोप लगते रहे हैं। वर्तमान में वरिष्ठ कांग्रेस पार्षद धर्मदास बैलबंशी हमेशा विपक्ष की भूमिका का निभाते आ रहे हैं। हाल ही में नगर पंचायत परिषद सोहागपुर ने जिस मान से संपत्तिकर की दर बढ़ाई है इसे श्री बेलबशी ने खुली लूट की संज्ञा देकर नगर के समस्त सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के अलावा नगर के सभी पत्रकारों को भी आगह करते सहयोग की अपेक्षा की है। ताकि नगर के जनमानस पर भारी-भरकम बोझ न पड़े। इधर बड़े अफसोस की बात तो यह है कि नगर पंचायत परिषद के पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष इस मामले में मौन साधकर बैठे हैं।वहीं कांग्रेस पदाधिकारी भी चुपचाप इस मामले को नजर अंदाज कर रहे हैं। इस बात की चर्चा गरम है कि जनता-जनार्दन के हितैषी पार्षदों को जनता ने नकार दिया था। अब जनता-जनार्दन लुटने वाली है।तो हम क्यों बोलें। जनता-जनार्दन को अपने हितों के जन आंदोलन करना चाहिए। श्री बेलबंशी ने सोशल मीडिया पर लिखी पाती में कहा है कि यह नगर वासियों से खुली लूट,डकैती भी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।नगर परिषद ने 7 गुना(700त्न) से 10 गुना(1000त्न) तक की टैक्स वृद्धि कर दी है। इस बेइंतहा टैक्स वृद्धि से नगर परिषद द्वारा सोहागपुर का प्रत्येक नागरिक को ठगा जा रहा है। शायद सत्तासीन जन प्रतिनिधियों की भी मंशा स्पष्ट नजर आ रही है। नगर में रोजगार की भरी कमी है। इसके अलावा न ही नगर में कोई उद्योग धंधे हैं। प्रति दिन सैकड़ों युवा रोजगार के लिए इटारसी और पिपरिया पलायन करते है जिसकी बानगी सुबह इटारसी जाने वाली अमरकंटक एक्सप्रेस और पिपरिया जाने वाली राजकोट एक्सप्रेस पर देखी जा सकती है। नगर का आम नागरिक आखिर इतना टैक्स कैसे दे पाएगा?

कालोनाइजर्स और बड़े टैक्स बकाया दार पर नगर परिषद मेहरबान। नगर में निर्माणधीन 80त्नकालोनी अवैध है। और इन कालोनियों पर करोड़ों रुपया टैक्स बकाया है लेकिन नगर परिषद इनसे टैक्स नहीं वसूल पा रही है जबकि इन कालोनियों में रोड नाली बनाकर उन्हें पुरस्कृत जरूर कर रही है। साथ नगर में कई बड़े टैक्स बकायादार है जिनसे भी टैक्स वसूली में नगर परिषद विफल है।

स्पष्ट है कि इस कर वृद्धि की चपेट में आम नागरिक ही आएंगे इन्ही नागरिकों से जोर जबदस्ती वसूली की जाएगी। मेरा नगर परिषद से अनुरोध है कि बड़ी हुई टैक्स दर वापिस ले जाकर पुराने मान से अथवा 05/10त्न की वृद्धि से टैक्स वसूला जाना चाहिए। इस बड़े हुए टैक्स के विरोध में यदि आम नागरिक आंदोलन करने के लिए भी बाध्य हो सकता है।अमरकंटक रोको जैसे आंदोलन इस नगर का इतिहास रहा है। उल्लेखनीय है कि अमरकंटक एक्सप्रेस आन्दोलन में नगर के वाशिंदे एक मत थे। जिसमें पुलिस को गोली चलानी पड़ी थी। अमरकंटक एक्सप्रेस उसी दिन से सोहागपुर में रुकना प्रारंभ हो गया था। वरिष्ठ पार्षद धर्मदास बैलवशी की यही मंशा नजर आती है।कि अत्यधिक संम्पतिकर का पुरजोर विरोध जनता-जनार्दन को करना चाहिए।

मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं जन जन तक पहुंचे : हेमंत खंडेलवाल

प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के 12 वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा की जिला कार्यशाला संपन्न

बैतूल। भाजपा जिला बैतूल द्वारा शुक्रवार को जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष ÷विश्वास, विकास एवं जनकल्याण÷ के पूर्ण होने पर आगामी 5 से 21 जून तक चलने वाले महाभियान की कार्यशाला को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि 12 साल प्रधानमंत्री के रूप में मोदी का एक दशक से ज्यादा का सफर ÷अनवरत विकास÷ का पर्याय बन गया है। केन्द्र की कल्याणकारी योजनाओं का हम तूलनात्मक अध्ययन करे तो आजादी के बाद पहली बार लोगो को प्रधानमंत्री आवास, स्वच्छ पेयजल, बिजली और सडक के साथ साथ किसानो व महिलाओं के लिए बेहतरीन योजनाएं आई है। जिससे किसान और महिलाएं सशक्त हुई है। आयुष्मान भारत योजना से लोगो को स्वास्थ्य लाभ सुगमता के साथ मिल रहा है। हमें इस पखवाडे के दौरान जन जन तक इन कल्याणकारी योजनाओं को पहुंचाना है। श्री खंडेलवाल ने कहा कि पात्र हितग्राही को शासन की योजनाओं का लाभ मिले इसीलिए पंजीयन से लेकर लाभार्थी होने तक कार्यकर्ताओं को अपने क्षेत्र में लगातार प्रवास और संवाद करने चाहिए। कार्यशाला को संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि 5 से 21 जून तक महाभियान, 7 बड़े कार्यक्रम होगें। श्री पंवार ने

महाभियान की रूपरेखा रखते हुए बताया कि पीएम मोदी के 12 वर्ष पूर्ण होने पर जिले भर में 5 से 21 जून तक विशेष कार्यक्रम होंगे। इसके लिए अलग-अलग कार्यक्रमों के प्रभारी भी नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर जिला-मंडल स्तर पर पौधरोपण, 8 से 14 जून तक विशेष जनसम्पर्क अभियान के तहत घर-घर संपर्क कर सरकार की योजनाओं की जानकारी, 11 से 12 जून तक मीडिया संवाद के माध्यम से केंद्र सरकार की 12 साल की उपलब्धियां बताई जाएंगी, 12 से 18 जून तक जन कल्याण शिविरों का आयोजन व मोदी सरकार की 12 वर्षों की उपलब्धियों पर प्रदर्शनी, 15 से 18 जून तक विभिन्न सभागार बैठकों का आयोजन, 19 से 20 जून तक प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु कार्यशालाएं तथा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर बूथ स्तर तक सामूहिक योग कार्यक्रम जिले में आयोजित किए जाएगें। अभियान की प्रस्तावना रखते हुए कार्यक्रम के जिला संयोजक कृष्णा गायकी ने कहा कि प्रदेश नेतृत्व के निर्देशो पर जो महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मोदी जी के विकास विश्वास और जनकल्याणकारी योजनाओं के अनवरत 12 वर्षों से जुडे पखवाडे को हमे समन्वय और संवाद के साथ नवाचार करते हुए शानदार तरीके से संपन्न करने है। कार्यशाला को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने संपन्न हुए कार्यक्रमो की समीक्षा करते हुए आगामी कार्यक्रमो में शक्ति केन्द्र को मंडल और बूथ मजबूत कडी बताते हुए मासिक बैठको के लिए बेहतर कार्ययोजना सामने रखी। कार्यशाला को किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष राघवेन्द्र राजपुत ने संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र एवं राज्य निर्देशित कार्यक्रमो को मतदान केन्द्र तक सफल कराने की महती जिम्मेदारी हम सबकी है। जिसे हमें भव्यता के साथ उत्सव के रूप में संपन्न करना है। कार्यशाला में विधायक मुलताई चंद्रशेखर देशमुख, विधायक आमला डा.योगेश पंडाग्रे, विधायक घोडाडोंगरी गंगा उइके, जिला महामंत्री डा.महेन्द्रसिंह चौहान मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संचालन अभियान के जिला सह संयोजक जगदीश पंवार ने एवं अंत में आभार टोली सदस्य देवीसिंह ठाकुर ने व्यक्त किया। कार्यशाला में विधायक, जिला पदाधिकारी, मंडल प्रभारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष , मंडल अध्यक्ष गण विशेष रूप से मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री का संवाद देशवासियों को राष्ट्र निर्माण और सकारात्मक बदलाव के लिए करता है प्रेरित : मोहन यादव

प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम जनभागीदारी और सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम : हेमंत खण्डेलवाल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को शाजापुर जिले की शुजालपुर विधानसभा के बूथ क्रमांक 258 स्थित जवाहरलाल नेहरू स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने बैतूल विधानसभा क्षेत्र के खेड़ी सांवलीगढ़ मंडल के बूथ क्रमांक 223 पर ग्राम खेड़ी सांवलीगढ़ स्थित श्री ओमकार पवार के कृषि फार्म में एवं पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने खण्डवा जिले के मांधाता विधानसभा के ग्राम भोसली, बूथ क्र. 51 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम का कृषकों, पार्टी कार्यकर्ताओं एवं स्थानीयजनों के साथ श्रवण किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' देशवासियों को प्रेरित करने वाला अनूठा मंच है, जो नागरिकों की उपलब्धियों सामने लाने के साथ और उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान के लिए प्रोत्साहित करता है। यह राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाला संवाद है, जिसकी सबसे बड़ी विशेषता सकारात्मकता और राष्ट्रहित केंद्रित दृष्टि है। राज्य सरकार हर स्थिति में किसानों की आय बढ़ाएगी। गांव से शहर आकर सामान बेचने वाले किसानों की जान बचाने के लिए सरकार उन्हें हेलमेट देगी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि 'मन की बात' देशभर की प्रतिभाओं, नवाचारों और राष्ट्रहित में उत्कृष्ट कार्य करने वालों की प्रेरणादायक कहानियों को जन-जन तक पहुंचाने वाला प्रभावी मंच है। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि हम सभी इससे प्रेरणा लेकर अपने-अपने क्षेत्र में राष्ट्र और समाज के हित में कार्य करने का संकल्प लें। भाजपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम प्रेरक कहानियों और नवाचारों को राष्ट्रीय पहचान दिला रहा है। जनभागीदारी से राष्ट्र निर्माण को नई गति और जन-जन को नई प्रेरणा मिल रही है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश शासन के उपमुख्यमंत्री, मंत्री, पार्टी के प्रदेश पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने बूथों पर किसानों व आमजन के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम का श्रवण किया।

हमारी सरकार जो कहती है वह करती है, भावांतर योजना से किसानों को लाभ देकर वचन निभा रहे : डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारी सरकार जो निर्णय करती है, उसे लागू करती है। हमने आज 2625 रुपये क्विंटल के दाम देकर 1 करोड़, 4 लाख मीट्रिक टन से ज्यादा गेहूं खरीदी का रिकॉर्ड बनाया है। अभी तक हमने अपने ही सारे रिकॉर्ड तोड़े हैं। पूरे देश में सबसे ज्यादा लगभग 14 लाख किसानों से गेहूं खरीदने का रिकॉर्ड भी मध्यप्रदेश सरकार ने बनाया है। यह हमारी सरकार के काम करने का तरीका है। उन्होंने कहा कि सरकार सोयाबीन के लिए भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को लाभ देकर वचन को निभा रही है। हमारी सरकार उड़द को भी प्रोत्साहन दे रही है। पहली बार हम उड़द पर बोनस दे रहे हैं। मुझे प्रसन्नता है कि दालों के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में नंबर-1 है। हम उसमें और आगे बढ़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भाजपा सरकार गरीब-युवा-अन्नदाता-महिलाओं के लिए भी काम कर रही है। किसान दूध-फल-सब्जी जैसे सामान मोटरसाइकिल पर गांव से शहर लाते हैं। हेलमेट न होने की वजह से उन पर दुर्घटना का खतरा बना रहता है। हमारी सरकार हेलमेट देकर किसानों की जान बचाएगी। इस तरह हम दुर्घटनाओं को भी रोकेंगे और किसानों को सुरक्षा की गारंटी भी मिलेगी। दूध उत्पादन को लेकर भी हमारी सरकार योजनाओं पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार आवारा पशुओं के लिए गौशाला बनवा रही है। हम गौ-माता का पालन करने वालों को प्रति गाय 40 रुपये रोज भुगतान कर रहे हैं।

त्विशा का शव फंदे से कैसे उतारा?

सीबीआई के सामने डेमो देंगे पति और सास

80 किलो की डमी टांगकर चेक होगी बेल्ट की मजबूती

भोपाल (नप्र)। राजधानी के कटारा हिल्स इलाके में हुई त्विशा शर्मा की संदिग्ध मौत के मामले में सीबीआई का शिकंजा कसता जा रहा है। मामले की तह तक जाने के लिए जांच एजेंसी अब एक बड़ा कदम उठाने जा रही है। सीबीआई की टीम आरोपी पति समर्थ सिंह और सास गिरीबाला सिंह को उनके उसी घर में लेकर जाएगी, जहां 12 मई की रात त्विशा का शव फंदे से लटका मिला था। वहां पूरी घटना का सीन रिक्रिएशन किया जाएगा।

80 किलो की एक डमी से बेल्ट की जांच

जांच से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, सीबीआई इस दौरान 80 किलोग्राम वजनी एक डमी का इस्तेमाल करेगी। आरोपी पति समर्थ ने पूछताछ में दावा किया है कि उसने त्विशा के शव को फंदे से नीचे उतारा था और उसकी मां गिरिबाला ने गले की गांठ खोली थी। अब सीबीआई दोनों को उसी जगह ले जाकर डमी के जरिए इसका लाइव डेमो लेगी। इसके अलावा, जिस बेल्ट से त्विशा के लटकने की बात कही जा रही है, उसकी मजबूती की फॉरेंसिक जांच होगी कि क्या वह इतना वजन संभाल सकती थी।

हाई कोर्ट द्वारा अग्रिम जमानत रद्द किए जाने के बाद आरोपी सास को गिरफ्तार कर लिया गया है। कोर्ट ने मां और बेटे दोनों को 2 जून तक सीबीआई कस्टडी में भेजा है। हमारी फॉरेंसिक टीम ने पहले ही मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। अब बयानों का मिलान करने के लिए दोनों को आमने-सामने बिठाकर पूछताछ की जा रही है।

सीबीआई के सवालों से घबराई पूर्व जज गिरिबाला सिंह, एंग्जाइटी-घबराहट की शिकायत की

एक्ट्रेस त्विशा शर्मा मौत मामले की जांच कर रही सीबीआई ने पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश गिरिबाला सिंह से पूछताछ के दौरान कई अहम बिंदुओं पर जवाब मांगे हैं। जांच का मुख्य फोकस कथित क्राइम सीन से छेड़छाड़, सीसीटीवी फुटेज और डिजिटल सबूतों को सुरक्षित से जुड़े पहलुओं पर है। सूत्रों के अनुसार सीबीआई की हिरासत में गिरिबाला सिंह ने एंग्जायटी और घबराहट की शिकायत की है। बताया जा रहा है कि वह लगातार बेचैनी की बात कहकर पूछताछ से बचने का प्रयास कर रही हैं। हालांकि, सीबीआई की ओर से एक महिला डीएसपी उनसे लगातार पूछताछ कर रही हैं।

सीबीआई ने एफआईआर में दर्ज आरोपों, भूमिका को लेकर मांगा स्पष्टीकरण

सूत्रों के अनुसार, जांच एजेंसी ने पूर्व जज से पूछा कि उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर में लगाए गए गंभीर आरोपों पर उनका क्या स्पष्टीकरण है और शिकायतकर्ता पक्ष के आरोपों के बावजूद उनकी भूमिका को सीमित क्यों माना जाए? एजेंसी ने यह भी सवाल उठाया कि ट्रायल कोर्ट ने केस डायरी, गवाहों के बयान और मृतका के परिजन द्वारा लगाए गए आरोपों पर पर्याप्त विचार क्यों नहीं किया। हालांकि, गिरिबाला सिंह ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को निराधार बता रही हैं। उन्होंने सीबीआई के सामने यह आशंका भी व्यक्त की कि गर्भपात के बाद अवसाद में आने के कारण त्विशा ने आत्मघाती कदम उठाया हो सकता है।

पिता की डांट के बाद छात्रा ने खाया सल्फास, मौत

देर रात मोबाइल चलाने पर लगी थी फटकार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गुनगा थाना क्षेत्र में एक छात्रा की सल्फास खाने से मौत हो गई। परिजनों के अनुसार शनिवार देर रात पिता ने उसे मोबाइल फोन चलाते देख फटकार लगाई थी। इसके बाद छात्रा ने कथित रूप से सल्फास खा लिया। गंभीर हालत में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां रविवार तड़के उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

12वीं में फर्स्ट डिवीजन से हुई थी पास

गुनगा थाना पुलिस के अनुसार रतुआ क्षेत्र निवासी खुशी कुशवाहा (17) पिता जगदीश कुशवाहा परिवार की सबसे बड़ी बेटी थी। उसके परिवार में एक छोटी बहन और एक छोटा भाई है। खुशी ने इसी साल 12वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी और भानपुर स्थित एक निजी कॉलेज में प्रवेश की तैयारी कर रही थी।

मोबाइल चलाते देखा था पिता ने

परिजनों ने पुलिस को बताया कि शनिवार देर रात खुशी मोबाइल फोन का उपयोग कर रही थी। इसी दौरान उसके पिता ने उसे मोबाइल चलाते देख डांट दिया। इसके बाद वह नाराज होकर घर के बाथरूम में चली गई।

कुछ समय बाद खुशी की तबीयत बिगड़ने लगी। परिजनों ने जब उससे पूछताछ की तो उसने सल्फास खा लेने की बात बताई। इसके बाद परिवार के सदस्य उसे तत्काल अस्पताल लेकर पहुंचे।

मप्र में मकानों की गणना का काम पूरा

7 लाख परिवारों ने खुद भरी ऑनलाइन जानकारी, हाईटेक तरीके से हुई मकानों की गिनती

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में जनगणना 2027 का पहला पड़ाव पूरा हो गया है। एमपी में 'मकान सूचीकरण और मकानों की गणना' (एचएलओ) का फील्ड काम तय समय सीमा के भीतर 30 मई को पूरा हो गया। एक महीने तक चले इस अभियान की शुरुआत 1 मई 2026 को हुई थी, जिसके तहत प्रदेश के हर कोने में डिजिटल माध्यम से आंकड़ों को कलेक्ट किया गया।

हाईटेक तरीके से हुई मकानों की गिनती

इस बार की जनगणना पूरी तरह से हाईटेक और डिजिटल रंग में रंगी नजर आई। प्रगणकों ने घर-घर जाकर मोबाइल ऐप के जरिए मकानों की स्थिति, परिवारों को मिलने वाली सुविधाओं और परिसंपत्तियों से जुड़े कुल 33 अधिसूचित प्रश्नों के जवाब दर्ज किए।

पोर्टल पर की गई दर्ज जानकारी

मकानों की गणना की पूरी प्रक्रिया की कड़ाई से मॉनिटरिंग एक विशेष पोर्टल के माध्यम से की गई, जिससे काम की गुणवत्ता और रफ्तार दोनों बनी रही। खास बात यह रही कि फील्ड वर्क से पहले 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 तक राज्य में स्व-गणना (सेल्फ एनुमरेशन) का विकल्प भी दिया गया था, जिसमें प्रदेश के 7 लाख से अधिक परिवारों ने खुद आगे आकर ऑनलाइन अपनी जानकारी दर्ज कराई।

डेढ़ लाख कर्मचारियों की जनगणना

इस महाभियान को जमीन पर उतारने के लिए एक विशाल अमला तैनात किया गया था। मप्र के 55 जिलों, 425 नगरीय निकायों और 449 तहसीलों के अंतर्गत आने वाले 54,923 गांवों में यह काम पूरा किया गया।

इसके लिए बनाए गए 1,37,000 से अधिक मकानसूचीकरण ब्लॉकों में 1,44,000 से ज्यादा प्रगणकों और पर्यवेक्षकों ने दिन-रात एक करके ड्यूटी निभाई, जबकि 15,000 कर्मियों को रिज़र्व में रखा गया था।

गोपनीय रहेगी जानकारी

प्रशासन, फील्ड स्टाफ और आम जनता के इसी सक्रिय तालमेल की बदौलत यह कठिन कार्य समय पर पूरा हो सका। इसके साथ ही जागरूकता फैलाने में मीडिया और सोशल मीडिया ने भी बेहद सराहनीय भूमिका निभाई।

सुरक्षा और गोपनीयता को लेकर सरकार ने साफ किया है कि इस प्रक्रिया में ली गई हर व्यक्तिगत जानकारी जनगणना अधिनियम 1948 और जनगणना नियमावली 1990 के तहत पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। इन आंकड़ों का इस्तेमाल सिर्फ जनकल्याणकारी योजनाओं और भविष्य की नीतियों को तैयार करने के लिए होगा, जिन्हें भारत सरकार पूरी जनगणना प्रक्रिया समाप्त होने के बाद सही समय पर जारी करेगी।

इस महत्वपूर्ण पड़ाव के पूरे होने पर निदेशक जनगणना कार्य मध्य प्रदेश ने राज्य के सभी नागरिकों को उनके अभूतपूर्व सहयोग के लिए दिल से धन्यवाद दिया है। अब सबकी नजरें इसके दूसरे और सबसे महत्वपूर्ण चरण जनसंख्या की गणना पर टिकी हैं, जो फरवरी 2027 में आयोजित किया जाएगा।

बेटी के शिक्षित होने से पूरी पीढ़ी शिक्षित होती है : रूचिवर्धन मिश्रा

भोपाल। नारी का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता भी निवास करते हैं। समाज में व्याप्त बेटा बेटी के विभेद का उन्मूलन करना आज महती आवश्यकता है।

ब्लेस वेलफेयर सोसाइटी एवं सुभाष एक्सीलेंस स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न नृत्य नाटिका यत्र नार्यस्तु पूज्यंते कार्यक्रम में आईपीएस अधिकारी श्रीमती रूचिवर्धन मिश्रा ने अपने अतिथि उद्बोधन में यह बात कही। उन्होंने नृत्य नाटिका के प्रतिभागी बालक बालिकाओं को कला के माध्यम से उन्होंने प्रोत्साहित किया। वरिष्ठ रंगकर्मी और अभिनेता बालेंद्र सिंह ने अभिनय कर रहे प्रतिभागियों को नारी के सम्मान और आदर भाव को जीवन में आचरण में लाने की शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि 15 दिन की इस नाटक कार्यशाला में रंगकर्म की विधा से जो कुछ भी सीखा है, वे इस कला को भविष्य में निखारने का प्रयास करें।

वरिष्ठ साहित्यकार और लेखक श्रीराम माहेश्वरी ने प्रतिभागियों के अभिनय को गहन साधना का अंश बताया। सुभाष एक्सीलेंस स्कूल के प्राचार्य सुधाकर पाराशर ने नृत्य नाटिका के प्रतिभागी बच्चों को सीखी बातों को आचरण में लाने तथा माता-पिता बड़ों के प्रति आदर भाव रखने की सीख दी। सभी छात्र-छात्राओं को उन्होंने परिवार, समाज और देश के प्रति नागरिक कर्तव्य का बोध कराया। कार्यक्रम संचालन मान्या पिंजानी ने किया। ब्लेस वेलफेयर सोसाइटी के संस्थापक एवं कोरियोग्राफर योगेंद्र सिंह राजपूत ने बीज वक्तव्य देते हुए संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्था की स्थापना 2015 में हुई। तब से नियमित रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हो रहे हैं। संस्था की यह 21 वीं कार्यशाला है, जो 15 से 30 मई 2026 तक आयोजित हुई है। लोकनृत्य, लोक संगीत, नृत्य नाटिका, बैले तथा रंगमंच के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता उन्मूलन के प्रति जन जागरूकता लाना संस्था का प्रमुख उद्देश्य है।

कमलनाथ के गढ़ में हलचल

विधानसभा अध्यक्ष से मिले कांग्रेस के पांचों विधायक, सियासी गलियारों में अटकलें तेज

छिंदवाड़ा (नप्र)। प्रदेश में अगले महीने होने वाले राज्यसभा चुनाव से पहले राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। इसी बीच छिंदवाड़ा दौरे पर आए विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर से जिले के कांग्रेस विधायकों की मुलाकात ने राजनीतिक चर्चाओं को हवा दे दी है। हालांकि कांग्रेस विधायकों ने मुलाकात को पूरी तरह क्षेत्रीय विकास और जनहित के मुद्दों से जुड़ा बताया है, लेकिन राज्यसभा चुनाव से ठीक पहले हुई इस बैठक को लेकर राजनीतिक गलियारों में कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं।

मध्यप्रदेश से राज्यसभा की तीन सीटों के लिए जून में चुनाव होना है। इनमें से दो सीटें भाजपा और एक सीट कांग्रेस के खाते में जाने की संभावना जताई जा रही है। ऐसे समय में विधानसभा अध्यक्ष से कांग्रेस विधायकों की सामूहिक मुलाकात ने राजनीतिक पर्यवेक्षकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है।

पांचों कांग्रेस विधायक पहुंचे सर्किट हाउस- विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर के छिंदवाड़ा आगमन पर जिले के पांचों कांग्रेस विधायक सर्किट हाउस पहुंचे। इस दौरान परासिया विधायक सोहन वाल्मीकि, जुन्नारदेव विधायक सुनील उइके, सौंसर विधायक विजय चौरे, चौरई विधायक सुजीत चौधरी और पांढुर्णा विधायक निलेश उइके ने उनका स्वागत किया और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। बैठक के दौरान विधायकों ने अपने विधानसभा क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए पर्याप्त बजट नहीं मिलने का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि भाजपा विधायकों के क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए 15-15 करोड़ रुपए की विशेष राशि स्वीकृत की गई है, जबकि कांग्रेस विधायकों के क्षेत्रों को इस तरह की सहायता नहीं मिली है।

हमारे क्षेत्रों के साथ हो रहा भेदभाव-कांग्रेस विधायकगण- कांग्रेस विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष के सामने यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि विपक्षी क्षेत्रों के विकास कार्य प्रभावित हो रहे हैं। उनका आरोप था कि राजनीतिक आधार पर विकास योजनाओं और बजट आवंटन में असमानता बरती जा रही है। विधायकों ने मांग की कि जिस प्रकार भाजपा विधायकों को विकास कार्यों के लिए विशेष राशि उपलब्ध कराई गई है, उसी प्रकार कांग्रेस विधायकों के क्षेत्रों को भी समान अवसर और संसाधन दिए जाएं। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष से इस मामले में हस्तक्षेप कर विकास के लिए आवश्यक राशि उपलब्ध कराने का आग्रह किया।

राज्यसभा चुनाव से जोड़कर देखी जा रही मुलाकात- हालांकि मुलाकात का आधिकारिक कारण विकास कार्यों के लिए फंड की मांग बताया जा रहा है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक इसे राज्यसभा चुनाव से पहले की सियासी गतिविधियों के रूप में भी देख रहे हैं। प्रदेश में राज्यसभा चुनाव को लेकर दोनों प्रमुख दल सक्रिय हैं और विधायकों की हर गतिविधि पर राजनीतिक नजरें टिकी हुई हैं। ऐसे में कांग्रेस विधायकों का सामूहिक रूप से विधानसभा अध्यक्ष से मिलना चर्चा का विषय बन गया है। हालांकि कांग्रेस नेताओं का कहना है कि मुलाकात का चुनावी राजनीति से कोई संबंध नहीं है और यह केवल क्षेत्रीय विकास के मुद्दों को लेकर आयोजित की गई थी।

भीषण आँधी की चपेट में रहा पूरा प्रदेश

रीवा में बारिश, मंडी में रखा अनाज भीगा, मैहर में शारदा मंदिर का रोप-वे बंद करना पड़ा, सतना-सिवनी और उमरिया में भी गिरा पानी

भोपाल (नप्र)। इस बार नौतपा में मध्य प्रदेश में गर्मी और लू के साथ आंधी-बारिश और ओले भी गिर रहे हैं। भोपाल के कुछ इलाकों में रविवार सुबह बूंदाबांदी हुई जबकि दोपहर में रीवा में बारिश से मंडी में रखा अनाज भीग गया। मैहर में शारदा माता मंदिर का रोप-वे बंद करना पड़ा। वहीं 30 मई शनिवार को देर रात आई भीषण आंधी से प्रदेश में कहीं-कहीं ब्लेक आउट जैसे स्थिति थी।

सतना में भी तेज अंधड़ के बाद अंधेरा छा गया। फिर गरज-चमक के साथ मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। 45 मिनट तक हुई प्री मानसून बारिश के कारण जगह-जगह जलभराव हो गया। सिवनी और उमरिया में भी पानी गिरा।

मौसम विभाग के अनुसार, आज देवास, सीहोर, राजगढ़, आगर-मालवा, छतरपुर, कटनी और शहडोल में भारी बारिश और ओलावृष्टि का ऑरेंज अलर्ट है। वहीं, 47 जिलों में भी गरज-चमक, आंधी और हल्की बारिश हो सकती है।

20 से ज्यादा जिलों में गिरा पानी- इससे पहले शनिवार को 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। भोपाल में शनिवार रात 12:30 बजे से तड़के 3 बजे तक तेज हवाएं चलीं, इस दौरान कई इलाकों में बिजली भी गुल रही। टीकमगढ़ में सवा इंच पानी गिर गया। दतिया में आधा इंच और नौगांव में पौन इंच बारिश हुई। ग्वालियर, इंदौर, धार, गुना, रतलाम, उज्जैन, दमोह, खजुराहो, रीवा, सागर, सतना, उमरिया, खरगोन, शिवपुरी, डिंडौरी, मंदसौर, खंडवा, शाजापुर, देवास, झाबुआ, टीकमगढ़, मुरैना, बैतूल, बालाघाट, श्योपुर में भी बारिश का दौर जारी रहा। श्योपुर में ओले भी गिरे।